نومبر۔ دسمبر ۲۰۱۰ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالىٰ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

محرم نمبر ۱۴۳۲ھ

نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

NOV. - DEC. 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

मुहर्रम नम्बर-1432 हि०

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

नवम्बर-दिसम्बर 2010 ई०

ज़िलहिज्जतुल हराम 1431 हि० मुहर्रमुल हराम 1432 हि०

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— **ख़ुतबाते कर्बला** सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वी ता०स०	3
2— **जेहादे मुख़्तार** सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वी ता०स०	19
3— **अलम और अलमदारी** सफ़वतुल उलमा मौलाना सै० कल्बे आबिद साहब	26
4— **शहादत है मतलूब व मक़सूदे मोमिन** अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब, कराची	30
5— **मारक-ए-कर्बला की शख़्सियतों का इंतेख़ाब** मौलाना सै० हसन ज़फ़र नक़वी साहब, कराची	32
6— **मुख़्य समाचार** इदारा	35

ताक़त की हार

वाक़िअ-ए-कर्बला से पहले आम तसव्वुर ये था कि फ़तह के लिए लश्कर ज़रूरी है, असलहों के ज़ख़ीरे लाज़िम हैं, क़तार दर क़तार फ़ौज हो जो मुख़ालिफ़ों को तहस-नहस कर दे, उनको मिटा दे, उनके अफ़राद असीर हो जाएं तो क़त्ल होने वाले लुटने वाले, क़ैदी बन जाने वाले मफ़तूह कहलाते थे और क़त्ल करने वाले, लूटने वाले, क़ैदी बनाने वाले फ़ातेह के लक़ब से सरफ़राज़ होते थे लेकिन इमाम हुसैन अ० ने फ़त्ह और शिकस्त का मेयार ही बदल दिया और तारीख़ के धारे का रुख़ मोड़ दिया, क़त्ल होकर भी, लुटकर भी, क़ैदी बन कर भी फ़त्ह हासिल की जा सकती है और वक़्ती नहीं बल्कि अबदी फ़त्ह, कर्बला के मैदान में इमाम हुसैन अ० जिन बहत्तर साथियों को लाए थे वह बहत्तर का अदद नहीं था बल्कि बहत्तर इकाइयाँ थीं जिनको कर्बला में इमाम हुसैन अ० ने बराबर से लाकर खड़ा कर दिया था क्योंकि अगर बहत्तर इकाइयों को बराबर रख दिया जाए तो इतना बड़ा अदद बन जाएगा जिसका हिसाब दुनिया का कोई कल्कुलेटर नहीं कर सकेगा, यही वजह है कि कर्बला के बहत्तर ने यज़ीद के एक लाख के लश्कर को ऐसी शिकस्त दी कि उसका नामो निशान भी बाक़ी न रहा और हुसैनियत का परचम आज तक सरबलन्द नज़र आ रहा है।

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी साहब

खुतबाते कर्बला

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
हिन्दी रूपः सै० गुलाम हुसैन ज़ैदी

ख़ताबा और ख़ुतबाः-

मिम्बर वग़ैरा पर या खड़े होकर नस्र (गद्य) में जो कलाम बग़ैर किसी ख़ास सुनने वाले को पेशे नज़र रखे हुए किया जाए उसे अरबी ज़बान में ख़ुतबा कहते हैं। शायद हमारी उर्दू ज़बान में तक़रीर का भी यही मतलब है। इस कलाम के करने को अरबी में ख़िताबत कहते हैं जो बफ़त्हे ख़ा है जिसमें ख़े पर ज़बर है। आम तौर पर लोग कसरा (ज़ेर) के साथ बोलते हैं मगर वह सही नहीं है। ख़ुतबा की लफ़्ज़ कभी इस मसदर (वह शब्द जिससे क्रियाएं बनती हैं, जैसे आना-जाना) के मायने के लिए भी इस्तेमाल होती है। वरना है वह हासिले मसदर यानी इस काम के अन्जाम देने से जो चीज़ वजूद में आई वह ख़ुतबा है और उस शख़्स को जो यह काम अच्छी तरह से कर सकता हो ख़तीब कहते हैं। (क़ामूसुल्लुग़ात)

अरब और ख़िताबत का फ़नः-

ख़िताबत के ज़रूरी हिस्से हैं बलाग़त और कुव्वते ख़याल (सोचने की ताक़त) और अरब में यह दोनों उनसुर (तत्व) जिस कमाल के साथ थे वह उनकी शायरी से ज़ाहिर ही है। बल्कि उनका क़ौमी नाम अरब ख़ुद ही उनकी बोलने की ताक़त का तर्जुमान (परिचायक) है।

फिर शायरी में बलाग़त की कार्यशैली का रुझान कभी-कभी गहरे जज़्बात के इज़हार की तरफ़ हो जाता है। जिनमें इन्फ़ेरादी तास्सुरात (व्यक्तिगत भावनाएं) या बाज़ नक़्क़ादों (आलोचक) की ज़बान में केवल दाख़िलियत (आन्तरिक्ता) होती है। मगर ख़िताबत का ताल्लुक़ एक जमात के साथ होता है। इसलिए उसमें तेज़ी और अमल पसन्दी और असर का उन्सुर ज़्यादा पया जाता है। इसलिए वह क़ौमें ख़िताबत में पीछे होती हैं जिन्हें अमल के मौक़े नसीब नहीं होते हैं और जज़्बात को उत्तेजित करने की कोई बुनियाद नहीं होती। लेकिन अरब क़ौम में उनके माहौल और आबो हवा के असर ने आज़ादी, बलन्द हिम्मती और एहसास में शिद्दत कूट-कूट कर भर दी थी। इसलिए बलाग़त उनके दिलों में एक अजीब बिजली की लहर पैदा करती थी। चन्द छोटे जुमले जो बलाग़त के साथ किसी ख़तीब की ज़बान से निकल जाते थे एक बड़ी से बड़ी जमाअत को उठा देते और बिठा देते थे। और फिर उनमें जो आपसी झगड़े और गृह युद्ध होते रहते थे और जो क़बीलों में टकराव होते थे उनमें ख़िताबत के इस्तेमाल के मौक़े ज़्यादा मिलते थे। यह ख़ुतबे अक्सर, जैसा मौक़ा होता था, कमानों को ज़मीन पर टेक कर और नैज़ों या तलवारों से इशारा कर-कर के पढ़े जाते थे और कभी ख़तीब अपने घोड़े पर सवार होकर तक़रीर करता था।

चूँकि शायरी और ख़िताबत के बहुत से अहम अनासिर (तत्व) मुश्तरक (समान) है। इसलिए ज़्यादातर शायर ख़तीब और ज़्यादातर ख़तीब शायर होते थे। और जिस क़बीले में शायर अच्छे होते थे उसमें ख़तीब भी अच्छे पैदा होते थे। फिर भी शायरी और ख़िताबत में जाहिलियत व इस्लाम के लेहाज़ से फ़र्क़ नज़र आता है। जाहिलियत के ज़माने में शायरी को ख़िताबत से ज़्यादा अहमियत दी जाती थी। इसलिए कि ख़िताबत का ताल्लुक़ इजतेमाई (सामूहिक) ज़िन्दगी के साथ होता है। और जाहिलियत में अरब में सांस्कृतिक जीवन बहुत सीमित था। लेकिन इस्लाम में ख़तीब का दर्जा शायर से अहम हो गया।

बात यह है कि इस्लाम ने व्यक्तिगत सुख को

मिटा कर सामूहिक सुख में बदल दिया था। इसलिए यहाँ उपदेश व भाषण, जेहाद के लिए तेयार करना, कार्यकलापों को व्यवस्थित करना इन्हीं चीज़ों का चलन था। और यह कोई बात बग़ैर ख़िताबत के नहीं हो सकती। इसीलिए पैग़म्बरे इस्लाम[स०] जबकि कुदरत की जानिब से शायरी से इस हद तक अलग रखे गए कि एलान हो गया "हम ने उसको शायरी नहीं सिखाई"। फिर भी ख़िताबत में आपका मुक़ाम निहायत ऊँचा है। हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०] ने अगरचे कभी रजज़ वग़ैरा के मौक़े पर शेर कहे। मगर आपके कलाम का कोई प्रमाणित मजमुआ (संकलन) तक ख़बर लिखने वालों और पुराने उलमा का जमा किया हुआ हाथ में मौजूद नहीं है। मगर ख़ुतबे आपके इस वक़्त तक वह है जो तारीख़ के पन्नों पर सुनहरे शब्दों में नुमायाँ है। और 'नहजुल बलाग़ा' और 'दस्तूरे मआलिमुल हेकम' वग़ैरा किताबों की शक्ल में अलग मौजूद हैं और एक दुनिया से ख़िराजे अक़ीदत (श्रद्धांजलि) हासिल करते हैं।

ख़िताबत को प्रेरित करने के लेहाज़ से कर्बला के मौक़े की अहमियतः-

दस मुहर्रम 61 हिजरी को होने वाली कर्बला की घटना जिसके सिलसिले की क़रीबी कड़ियाँ रजब 60 हिजरी से शुरु हुईं थीं इसमें जितनी ख़िताबत को प्रेरित करने वाली चीज़ें जमा थीं उतनी दुनिया की तारीख़ में कहीं मुश्किलसे नज़र आ सकती हैं।

यह एक बहुत बड़ा हक़्क़ो-बातिल का मुक़ाबला था। माद्दियत (भौतिकता) व रूहानियत (अध्यात्मिकता) का कभी न ख़त्म होने वाला टकराव था। एक बहुत छोटी संख्या के लोगों के इरादे व हिम्मत, जोश व उमंग के उस प्रदर्शन का मौक़ा था जो उसे अपने से कई गुना ज़्यादा तादाद और मुश्किलों व मुसीबतों के सैलाब के मुक़ाबले में पुर इस्तेक़लाल (स्थिर) और बाअमल रख सके। और हक़ से बेख़बर या तास्सुब (भेदभाव) बरतने वाले दुश्मन गिरोह के सामने सच के इज़हार और हुज्जत तमाम करने की वह कोशिश थी जो उसके ग़लत कामों में क्षमा याचना या बहाने का कोई पहलू बाक़ी न रखे। और क़यामत तक आने वाली नस्लों के सामने इस नाबराबर मुक़ाबले के कारणों को पेश कर देना था जो आइन्दा तारीख़ के लिए हक़ को पहचानने और मामलों को समझने का सरमाया बन सकें। यह तमाम मक़सद ख़ुतबों के ही ज़रिये से हासिल हो सकते थे। और इसलिए करबला से मुताल्लिक़ ख़ुतबों को सिर्फ़ अदबी हैसियत से अहमियत हासिल नहीं है बल्कि हुसैन[अ०] की शहादत के फ़लसफ़े को समझाने में भी उनका बड़ा दख़्ल है।

वाक़िए कर्बला की भूमिका से सम्बन्धित सबसे पहला ख़ुतबाः-

जहाँ तक मुझे मालूम है हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने मदीन-ए-मुनव्वरा से रवानगी के वक़्त कोई ख़ुतबा इरशाद नहीं फ़रमाया और न उसका मौक़ा था। इसी तरह मक्क-ए-मोअज़्ज़मा पहुँचने के बाद भी कोई ख़ुतबा हज़रत का नहीं मिलता। इसलिए कि आपकी हैसियत मक्का मोअज़्ज़मा के क़याम में सिर्फ़ एक पनाहगज़ीं (शरणार्थी) की थी। हुकूमते यज़ीद के ख़िलाफ़ कोई संगठन बनाने या तैयारी करने की कोई मुहिम आपके सामने न थी। हाँ, आपके मक्का मोअज़्ज़मा में ठहरने की इत्तेला जब कूफ़े में हुई तो कूफ़ा वालों में हरकत पैदा हुई। और सुलेमान बिन सर्द ख़ज़ाई के मकान पर लोग इकटठा हुए। इस मौक़े पर जनाब शैख़ मुफ़ीद अलैहिर्रहमा के अलफ़ाज़ यह हैं किः-

"कूफ़े वालों को मुआविया के मरने का हाल मालूम हुआ तो यज़ीद की करतूतों की चर्चा होने लगी। और इमाम हुसैन[अ०] और आपके बैअत यज़ीद से इन्कार और इब्ने ज़ुबैर के वाक़िआत और उन दोनों के मक्के की तरफ़ जाने के हालात भी मालूम हुए। तो कूफ़े के शिया सुलेमान बिन सर्द ख़ुज़ाई के मकान में जमा हुए और उन लोगों ने मुआविया के मरने का ज़िक्र किया और ख़ुदा का शुक्र अदा किया।

इस मौक़े पर सुलेमान बिन सर्द ख़ुज़ाई ने कहा कि मुआविया की मौत हो गई और हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने बैअत से इन्कार किया है और मक्का मोअज़्ज़मा चले गए हैं। और तुम लोग उनके और उनके पिदरे बुज़ुर्गवार के शिया हो। अब अगर तुम यक़ीन के साथ समझते हो कि उनकी मदद करोगे और उनके दुश्मनों से जंग करोगे

तो उन्हें ख़त लिखो और अगर सुस्ती और कमज़ोरी का अन्देशा (सन्देह) महसूस करो तो देखो ख़बरदार धोका देकर उनकी जान को ख़तरे में न डालो। सब ने कहा नहीं बल्कि हम उनके दुश्मन से जंग करें और उनके सामने अपनी जान निसार करेंगे। कहा तो फिर ख़त लिखो। ख़त लिखा गया।"

कलाम के सन्दर्भ से ज़ाहिर होता है कि सुलेमान से पहले कुछ और वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये थे। उसके बाद सुलेमान ने यह दूरअन्देशी की तक़रीर की थी। मगर अफ़सोस है कि पहले मुक़रेरीन (वक्ताओं) के नाम और उनके ख़ुतबे हम तक नहीं पहुँच सके। इसलिए जहाँ तक हमारी पहुँच का सम्बन्ध है सुलेमान ही के शब्दों को इस सिलसिले का पहला ख़ुतबा मान रहे हैं। यह भी ज़ाहिर कि यह सुलेमान का पूरा ख़ुतबा नहीं है बल्कि इसका एक ख़ुलासा (सारांश) है जो हम तक पहुँच सका है।

आबिस शाकरी की तक़रीरः-

जब हज़रत सय्यदुश्शोहदा^अ॰ ने अपने चचाज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को अपना नायब बनाकर कूफ़े रवाना किया और वह कूफ़े पहुँचे। इस मौक़ के हालात में तबरी ने लिखा हैः-

"मुस्लिम कूफ़े में पहुँच कर मुख़्तार बिन अबी उबैदा के मकान में जो आजकल ख़ान-ए-मुस्लिम बिन मुसय्यब के नाम से मशहूर है, ठहरे और शिया लोग उनके पास आने जाने लगे। जब एक काफ़ी जमाअत उनके पास जमा हो गई तो उन्होंने उनके सामने हज़रत इमाम हुसैन^अ॰ का ख़त पढ़कर सुनाया। सब लोग रोने लगे। उस वक़्त आबिस बिन अबी शबीब शाकरी खड़े हुए और उन्होंने हम्दो सनाए इलाही (ईश्वर की प्रशंसा) अदा की। फिर कहा साफ़ बात यह है कि मैं आपको उन लोगों के मुताल्लिक़ कुछ बताना नहीं चाहता। और नहीं समझ सकता कि उनके दिलों में क्या है और उसके मुताल्लिक़ आपको धोखा देना पसन्द नहीं करता। बख़ुदा जो कुछ मैंने अपने दिल में ठान रखा है वह मैं आपको बताता हूँ। बख़ुदा जब आप लोग बुलाएंगे तो मैं फ़ौरन लब्बैक कहूँगा और आप हज़रात के सामने अपनी तलवार से आख़िरी दम तक हर्बो-ज़र्ब (मार-काट) करूँगा जिससे मेरी नियत सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी (प्रसन्नता) होगी और कुछ नहीं।"

अगरचे यह ज़ाहिर होता है कि यह शब्द जनाबे मुस्लिम से कहे गये हैं। इस लिहाज़ से उसे ख़िताबत नहीं बल्कि बातचीत में शामिल करना चाहिए। मगर उसके पेश होने का अन्दाज़, खड़ा होना, हम्दो सना अदा करना और फिर उसका पसमन्ज़र (पृष्ठभूमि) और मज़मून यह बताता है कि उसमे इस मुनासिबत से कि जनाब मुस्लिम ने हज़रत इमाम हुसैन^अ॰ का ख़त पढ़कर सुनाया था अगरचे मुख़ातिब जनाब मुस्लिम हैं मगर मक़सद उससे तमाम मजमे को प्रभावित करना और एक तरफ़ उनके ख़ाली-ख़ूली रोने पीटने को बेकार ज़ाहिर करना और दूसरी तरफ़ अपने अज़्म व इरादे की इत्तेला देकर उन्हें अपने-अपने दिल की गहराईयों में जाएज़ा लेने की तरफ मुतवज्जेह करना है। और इसलिए उनके अलफाज़ को एक ख़ुतबे ही की हैसियत देना सही मालूम होता है।

हबीब बिन मज़ाहिर की तक़रीर

उसी जलसे में आबिस बिन अबी शबीब शाकरी के बाद तबरी का बयान हैः-

हबीब बिन मज़ाहिर खड़े हुए और कहा "ख़ुदा की रहमत तुम पर। तुमने अपने दिल की बात बड़े मुख़्तसर (संक्षिप्त) अलफ़ाज़ में अदा कर दी।" फिर कहा "मैं भी, क़सम उस ख़ुदा की, जिसके सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, यही इरादा रखता हूँ जो इनका इरादा है।"

सईद बिन अब्दुल्लाह हनफ़ी की तक़रीर

हबीब बिन मज़ाहिर की तक़रीर के बाद तबरी ने लिखा हैः- "फिर सईद बिन अब्दुल्लाह हनफ़ी ने ऐसा ही कहा।"

ऐसा ही के मायने वही अलफ़ाज़ तो नहीं समझना चाहिए बल्कि ऐसी तक़रीर की जिसका मज़मून (विषय) वही था। इसका मतलब यह है कि उनके असल अलफ़ाज़ हम तक नहीं पहुँच सके कि वह क्या थे।

यह तीनों तक़रीरें जिस सच्चाई के साथ हुई थीं। उन्हें करबला में इन बहादुरों के ख़ून ने सही साबित कर दिया।

दरबारे दुश्मन में एक मुख़्तसर मगर बेहतरीन ख़ुतबाः-

यह ख़ुतबा ही नहीं बल्कि एक हिम्मत का काम

था। जिसके ख़तीब ने इन्तेहाई नाज़ुक और ख़तरनाक माहौल में अपने इस खुतबे से जेहाद हुसैनी में वह इमकानी (अपने बस भर) शिरकत की है जो तारीख़ में यादगार हैसियत रखती है।

यह ख़तीब क़ैस बिन मुसहर सैदावी है जिन्हें हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने मक्का मोअज़्ज़मा से ईराक़ की तरफ रवानगी के बाद बत्नुररिमाह के हाजिर नामी मक़ाम से कूफ़ा वालों के नाम ख़त देकर भेजा था। वहाँ सूरते हाल यह थी कि मुस्लिम बिन अक़ील शहीद हो चुके थे और इब्ने ज़ियाद की तरफ़ से कूफ़े की नाकाबन्दी हो गई थी। और इसी सिलसिले में क़ादसिया के नाके पर हसीन बिन नुमैर हज़ारों की फौज लिए हुए तैनात था।

शेख़ मुफ़ीद लिखते हैं और तबरी की रिवायत भी इससे सहमत हैः-

क़ैस बिन मुसहर इमाम हुसैन[अ०] का ख़त लेकर कूफ़े की तरफ रवाना हुए। यहाँ तक कि जब क़ादसिया पहुँचे तो हसीन बिन नुमैर ने उन्हें गिरफ़्तार कर दिया और उन्हें उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास भेज दिया। इब्ने ज़ियाद ने उनसे कहा कि चढ़ों और हुसैन बिन अली को बुरा कहो। यह सुनकर क़ैस मिम्बर पर गए। हम्दो सना-ए-इलाही के बाद कहा कि "ऐ लोगों तुमको मालूम होना चाहिए कि हुसैन बिन अली खुदा के बन्दों में सबसे बेहतर फ़ातिमा[स०] दुख़्तरे पैग़म्बर के बेटे हैं। और मैं उनकी तरफ़ से तुम्हारे पास भेजा हुआ आया हूँ। तुम्हारा फ़र्ज़ है कि उनकी मदद के लिए रवाना हो जाओ।" उसके बाद उन्होंने इब्ने ज़ियाद और उसके बाप पर लानत की और हज़रत अली इब्ने अबीतालिब[अ०] पर दुरूद भेजा और आपकी तारीफ़ की। फौरन इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया कि उन्हें महेल के कोठे से नीचे गिरा दिया जाए। वह गिरा दिये गये और उनके जिस्म के टुकड़े-टुकड़े उड़ गए। और एक रिवायत में है कि वह इस हाल में ज़मीन पर गिरे कि उनके हाथ पाँव बंधे पड़े हुए थे तो उनकी हड्डियाँ टूट गईं। मगर उनमें ज़रा सी जान बाक़ी थी तो एक शख़्स जिसका नाम अब्दुल मलिक बिन उमैर लहमी था बढ़ा और उसने उन्हें ज़िब्ह (क़त्ल) कर दिया। जब इस बारे में उसे बुरा कहा गया तो उसने कहा "मैंने तो चाहा कि उन्हें तकलीफ़ से छुटकारा दिला दूँ"।

इस खुतबे की अगर व्याख्या की जाए तो काफ़ी लम्बी होगी। क़ैस के अलफ़ाज़ से ज़ाहिर है कि वह जानते थे कि इस खुतबे के ख़त्म होने से पहले उनकी ज़िन्दगी का ख़ात्मा हो जाएगा। इसलिए वह इस थोड़े समय में वह सब कुछ कह देना चाहते थे जो उन्हें कहना था। इसलिए इब्ने ज़ियाद की इस फ़रमाइश पर कि ऊपर जाकर हुसैन बिन अली[अ०] को बुरा कहो। उन्होंने एक लम्हा भी देर नहीं की। इससे इब्ने ज़ियाद को यह समझने की काफ़ी वजह थी कि माहौल की हैबत ने क़ैस को अपनी जान की ख़ैर मनाने पर आमादा कर दिया है। और वह अब अपनी जान की हिफ़ाज़त के लिए वह सब कुछ करने पर तैयार हैं जो मैं कहूँ। बलन्दी पर जाने के बाद उन्होंने इब्ने ज़ियाद की बुराई या अमीरुलमोमिनीन की तारीफ़ को पहले नहीं रखा। क्योंकि फिर उनका असल मक़सद रह जाता। उन्होंने शदीद दिली बेचैनी के बावजूद अपनी तक़रीर को जैसा कि संतुलित और संतुष्ट हालात में करना चाहिए उस के मुताबिक़ हम्दो सना-ए-इलाही (अल्लाह की तारीफ़) से शुरु की जिससे इब्ने ज़ियाद कुछ समझ ही नहीं सकता था कि वह इसके बाद क्या कहेंगे। फिर उन्होंने अपनी बात की शुरुआत हुसैन बिन अली[अ०] के नाम के साथ की जिससे इब्ने ज़ियाद और तमाम मजमा ध्यान से सुनने लगा कि अब उसके बाद हुसैन[अ०] का दोस्त और हुसैन[अ०] का क़ासिद वह कुछ कहेगा जो हुसैन[अ०] के दुश्मनों का दिल चाहता है। मगर इसके बाद (अगरचे रवायत करने वालों ने नहीं बताया) मगर अवश्य उनके बयान की रफ़्तार तेज़ हो गई। उन्होंने बिजली की सी गरज और बिजली की सी तड़प के साथ हुसैन[अ०] की ज़ाती बलन्दी और ख़ानदानी खुसूसियतें (इब्ने फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह[स०]) और अपना हुसैन के दूत होने और कूफ़ा वालों के कर्तव्य का एलान किया। और अब अपने सफ़र के मक़सद और ज़िन्दगी के माहसल को पूरा करके मौत को यक़ीनी समझते हुए इतनी देर में कि जब तक जल्लाद उन तक पहुँचे तारीफ़ और बुराई करने के साथ अपनी भावनाओं और अंतरात्मा दोनों की प्यास के बुझाने का सामान किया।

और अब उनकी ज़िन्दगी इब्ने ज़ियाद के लिए इस हद तक नाक़ाबिले बर्दाश्त हो गई कि क़त्ल के किसी ऐसे हुक्म के बजाए जिसमें कुछ देर लगे। बेचैनी के साथ अस्वाभाविक तरीक़े से उनको महल के ऊपर से नीचे गिरा देने का हुक्म दिया। यह हो गया और क़ैस की उखड़ती हुई सांसें कह रही थीं

"शादम अज़ ज़िन्दगी-ए-ख़ेश कि कारे करदम"

(मैं अपनी ज़िन्दगी पर खुश हूँ कि मैंने बड़ा काम किया।)

तारीख़े तबरी से पता चलता है कि क़ैस बिन मुसहर की शहादत की ख़बर हज़रत हुर से मुलाक़ात के बाद पहुँची है। कर्बला के बहुत क़रीब मंज़िले अज़ीबुल हजानात पर जब कूफ़े के चार आदमी जो मुजमा बिन अब्दुल्लाह आऐज़ी वग़ैरा थे नाफ़े बिन हिलाल का ख़ाली घोड़ा अपने साथ लिये तिरिम्माह बिन अदी की रहनुमाई में करबला पहुँचे। तबरी ने लिखा हैः-

"इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया ज़रा वहाँ के लोगों के हालात तो बताओ। मुजमा बिन अब्दुल्लाह आएज़ी ने जो उन चार आने वाले आदमियों में से एक थे कहा कि जो बड़े-बड़े लोग हैं उनको बड़ी रिश्वतें दी गई हैं और उनकी जेबें भर दी गई हैं। इस तरह उनको तरफ़दार बना लिया गया है। लेहाज़ा वह सब एक साथ आपके ख़िलाफ़ हैं। रह गए दूसरे लोग उनके दिल तो आपकी तरफ़ झुकते हैं मगर तलवारें उनकी कल आपके ख़िलाफ़ ही बलन्द होंगी। कहा अच्छा कुछ तुम्हें मेरे क़ासिद की भी ख़बर है? कहा, वह कौन फ़रमाया, क़ैस बिन मुसहर सैदावी। कहा, "जी हाँ उनका वाक़ेआ यह है कि हसीन ने उनको गिरफ़्तार कर लिया और उन्हें इब्ने ज़ियाद के पास भेज दिया। इब्ने ज़ियाद ने उन्हें हुक्म दिया कि वह आपकी और आपके वालिदे बुज़ुर्गवार की शान में नामुनासिब कलमात इस्तेमाल करें। मगर उन्होंने आप और आपके पिदरे बुज़ुर्गवार पर दुरूद भेजा। और इब्ने ज़ियाद और उसके बाप पर लानत की और लोगों को आपके आने की इत्तेला दी और उन्हें आपकी इमदाद की तरफ़ बुलाया। इस पर इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया और वह महल के ऊपर से नीचे फेंक दिये गये।" यह सुनकर हज़रत की आँखों में आँसू डबडबा आए। और हज़रत रोने लगे। फिर क़ुरआन की आयत पढ़ी (जिसका मज़मून यह है) कि कुछ गुज़र गए और कुछ वक़्त के मुन्तज़िर हैं और उन सब ने अपनी बात को बदला नहीं। फिर कहा, "ख़ुदावन्दा उनके और हमारे लिए बहिश्त (जन्नत) को आवभगत की जगह बना दे और हमारे उनके बीच अपनी रहमत की जगह और अपने जमा किए हुए सवाब के मरकज़ (केन्द्र) को एक जगह कर दे।"

इसी से मिलता हुआ अब्दुल्लाह बिन यक़तुर का वाक़ेआः-

क़ैस बिन मुसहर सैदावी के वाक़ये से बहुत मिलता-जुलता एक वाक़िआ तबरी ने अब्दुल्लाह बिन यक़तुर के बारे में लिखा है। लेकिन इसका ज़िक्र उन्होंने राह के वाक़ेआत में उस मंज़िल पर नहीं किया है जहाँ से अब्दुल्लाह बिन यक़तुर को रवाना किया है। बल्कि उस मंज़िल के हालात में ज़िक्र किया है जहाँ उनकी शहादत की ख़बर पहुँची है। वह लिखते हैंः-

"मुझ से अबुअली अंसारी ने बयान किया बक्र बिन मसअब मज़नी की ज़बानी, उसने कहा कि हुसैन[अ०] जिस चश्मे की तरफ़ से गुज़रते थे वह लोग आपके साथ हो जाते थे। यहाँ तक कि जब आप मंज़िले ज़ुबाला पर पहुँचे तो आपको आपके दूधशरीक भाई अब्दुल्लाह बिन यक़तुर के क़त्ल की ख़बर पहुँची। आपने उन्हें मुस्लिम बिन अक़ील की तरफ़ रास्ते से भेजा था। जबकि यह मालूम नहीं था कि वह शहीद हो चुके हैं। क़ादसिया में हसीन बिन नुमैर की फ़ौज ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और इब्ने ज़ियाद के पास भेज दिया। उसने कहा कि महल के ऊपर चढ़ो और हुसैन बिन अली[अ०] पर (माज़ल्लाह) लानत करो। फिर उतरो तो तुम्हारे बारे में कुछ फैसला करूँगा। यह सुनकर वह महल के ऊपर गए। लोगों के सामने पहुँचे तो कहा "ऐ लोगों! मैं दुख़्तरे रसूले ख़ुदा[स०] हज़रत फ़ातिमा[अ०] के फ़रज़न्द इमाम हुसैन[अ०] का भेजा हुआ हूँ। ताकि तुम उनकी मदद और नुसरत करो इब्ने मरजाना के ख़िलाफ़ जो सुमय्या की बे बाप की औलाद है। यह सुनना था कि उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया और उन्हें महल के ऊपर से ज़मीन की तरफ़ फेंक दिया गया। जिससे उनकी हड्डियाँ टूट-फूट गईं

और उनमें ज़रा सी जान बाक़ी रह गई तो एक शख़्स आया जिसका नाम अब्दुल मलिक बिन उमैर लहमी था उसने उन्हें ज़िब्ह किया। तो जब लोगों ने बुरा भला कहा तो उसने कहा कि मैंने तो चाहा कि उन्हें राहत दे दूँ। हश्शाम का बयान है कि हमसे अबुबक्र बिन अयाश ने एक शख़्स की ज़बानी बयान किया। उन्होंने कहा कि वह असल में अब्दुल मलिक इब्ने उमैर लहमी न था जिसने उठकर उन्हें ज़िब्ह किया बल्कि एक दूसरा लम्बे क़द वाला घुंघराले बालों वाला शख़्स था जो अब्दुल मलिक बिन उमैर से कुछ मिलता हुआ था। यह ख़बर इमाम को उस वक़्त पहुँची जब आप मंज़िले ज़बाला पर थे। हज़रत ने लोगों के सामने एक तहरीर पढ़ी जिसमें लिखा था कि बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। वाज़ेह (स्पष्ट) हो कि हमको निहायत दर्दनाक ख़बर पहुँची है और वह मुस्लिम बिन अक़ील हानी बिन उरवह और अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर के क़त्ल होने की। और यह कि हमारे लोगों ने हम से सहयोग छोड़ दिया। लिहाज़ा जो शख़्स तुम में से वापस जाना चाहे वह चला जाए। उस पर हमारी तरफ़ से कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

इसमें जहाँ तक क़ादसिया में गिरफ़्तार होने, इब्ने ज़ियाद के पास भेजे जाने, उसकी तरफ़ से महल पर चढ़कर इमामे हुसैन[अ०] को बुरा कहने के हुक्म और महल पर जाकर उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तक़रीर करने और वहाँ से गिरा दिये जाने की असली घटना है वह क़ैस बिन मुसहर के वाक़िए के साथ इतना एक सी है कि उन्हें दो अलग-अलग वाक़िए मानना मुश्किल होता है। और इसलिए शैख़ मुफ़ीद अलैहिर्रहमा ने क़ैस बिन मुसहर सैदावी के वाक़िए ही को असली क़रार दिया है और अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर के नाम से उसमें बतौर एक कथन के लिखा है। उन्होंने लिखा है:-

जब इमामे हुसैन बतनुररिमाह के मक़ाम हाज़िर तक पहुँचे तो क़ैस बिन मुसहर सैदावी को कूफ़े की तरफ रवाना किया। और एक क़ौल यह है कि उन्हें नहीं बल्कि आपने अपने दूध शरीक भाई अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर को रवाना किया था।

आख़िर में अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर के क़त्ल का यह हाल कि अब्दुल मलिक बिन उमैर लहमी ने ज़िब्ह किया और कहा कि मैं राहत देना चाहता था। उन्होंने क़ैस ही की शहादत के हाल में एक क़रार देकर नक़ल कर दिया है जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है। इस सूरत में एक शक्ल तो यह है कि हम क़ैस बिन मुसहर के वाक़िए को असली मानें और यह समझें कि किसी वजह से कुछ राविपों ने इसी को अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर से सम्बन्धित कर दिया। मगर तबरी ने हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की जो तहरीर मंज़िले ज़ुबाला पर पढ़ने का हाल लिखा है उस तहरीर के अलफ़ाज़ में साफ़-साफ़ अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर ही के मुताल्लिक़ इस वाक़िए को सही समझें और क़ैस बिन मुसहर से इस वाक़िए को सम्बन्धित न मानें। मगर क़ैस का ज़िक्र शेख़ मुफ़ीद और तबरी दोनों ही कर रहे हैं। और लिखते हैं कि वह बतनुररिमाह के मुक़ाम हाजिर से भेजे गए थे। इसके मानी यह है कि उनकी शख़सियत और उनका इमाम हुसैन[अ०] की तरफ़ से भेजा जाना सर्वमान्य है। तीसरी सूरत यह है कि क़ैस और अब्दुल्लाह दोनों ही के लिए घटना के समान हिस्से को एक जैसा घटित होना मान लें और ख़ास बातों को हर एक से अलग सम्बन्धित करें। यानी यह कहें कि क़ैस और अब्दुल्लाह में इतना फ़र्क़ है कि क़ैस ने शुरु में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की तारीफ़ व तौसीफ़ में ख़ैर ख़लक़ुल्लाह (अल्लाह के बन्दों में सबसे अच्छा) व इब्ने फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह[स०] के अलफ़ाज़ कहे थे और इसके बाद अपने भेजे जाने का ज़िक्र किया था। और अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर ने शुरु ही से इसी में यह किया कि बस अपने भेजे जाने का ज़िक्र किया और उनकी मदद और नुसरत करो। और क़ैस ने बाद में इब्ने ज़ियाद और उसके बाप पर लानत की और अमीरुलमोमिनीन पर सलवात भेजी। और अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर ने इमाम हुसैन[अ०] की मदद की दावत के साथ ही यह कह दिया कि इब्ने मरजाना के ख़िलाफ़ जो सुमय्या की बे बाप की औलाद है। और उसके बाद यह फ़र्क़ समझा जाए कि क़ैस बिन मुसहर का जिस्म कोठे पर से ज़मीन पर गिरते ही टुकड़े-टुकड़े हो गया। मगर अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर की सिर्फ़ हड्डियाँ टूटी थीं और उनमें थोड़ी सी जान

बाक़ी थी। और अब्दुल मलिक बिन उमैर लहमी ने उन्हें ज़िब्ह किया और जब बुरा कहा गया तो कहा कि मैं उन्हें राहत देना चाहता था।

दोनों रिवायत को एक साथ करने की बज़ाहिर तो यही सूरत है। मगर जो तारीख़ को समझते हैं वह अन्दाज़ा कर सकते हैं कि इसमें क्या विरोधाभास है? इनमें से जिसको पहले इमाम ने रवाना फ़रमाया हो उसके बाद दूसरे के रवाना करने की ज़रूरत क्या थी? दूसरे यह कि वाक़िए की सूरतेहाल से ज़ाहिर है कि इब्ने ज़ियाद का यह हुक्म देना कि महल पर जाकर हुसैन[अ०] को बुरा कहो। मगर उसी से इमाम हुसैन[अ०] के क़ासिद का यह फ़ायदा उठाना कि मिशन का प्रचार कर दे एक हाकिम के लिए और वह भी इब्ने ज़ियाद का सा कितनी शर्मनाक हार थी। अब एक दफ़ा वह इतनी बड़ी चोट खाने के बाद फिर बिल्कुल उसी तरह की चोट खाने के लिए तैयार हो जाता या धोखा खा जाता। इनमे से कोई बात समझ में नहीं आती।

तीसरे यह कि इस सूरत में इमाम हुसैन[अ०] ने मंज़िले ज़ुबाला में जो तहरीर पढ़ी है उसमें मुस्लिम बिन अक़ील और हानी बिन उरवह के साथ दो शख़्सों की शहादत का ज़िक्र होना चाहिए। एक क़ैस बिन मुसहर और दूसरे अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर। मगर आपके यहाँ ज़िक्र एक ही शख़्स का है दूसरे का कोई ज़िक्र नहीं है। चौथे यह कि मुजमा बिन अब्दुल्लाह आएज़ी से इमाम ने सिर्फ़ अपने एक क़ासिद को पूछा और वह क़ैस बिन मुसहर सैदावी। दूसरे क़ासिद यानी अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर का कुछ हाल न पूछा कि उन पर क्या गुज़री। हाँ, उन आख़री दो बातों का जवाब यह हो सकता है कि अब्दुल्लाह बिन यक़्तुर की ख़बर जनाब मुस्लिम व हानि के साथ पहले आ चुकी थी। जिसकी हज़रत ने मंज़िले ज़ुबाला पर ख़बर दी और क़ैस की ख़बर हुर से मुलाक़ात के बाद तक कोई नहीं आई थी। इसलिए मुजमा बिन अब्दुल्लाह से हज़रत ने उन्हीं के बारे में पूछा।

फिर भी तारीख़ी हैसियत से यह मसला अभी तक मेरी निगाह में मुश्किल की हैसियत रखता है। जो पूरे तौर पर हल होते नज़र नहीं आती।

हुर की फ़ौज के सामने इमाम का ख़ुतबा

इराक़ की तरफ जाते हुए जब हुर की एक हज़ार की फ़ौज इमाम से आकर कर्बला में मिली। हज़रत उन्हें पानी पिला चुके और उसके बाद ज़ोहर की नमाज़ का वक़्त आया तो हज़रत ने नमाज़ से पहले उस लश्कर के सामने एक तक़रीर फ़रमाई। जिसका ज़िक्र शैख़ मुफ़ीद और तबरी दोनों ने इस तरह किया है-

हुर इमाम के साथ रहा यहाँ तक कि नमाज़ ज़ोहर[1] का वक़्त आया और इमाम हुसैन[अ०] ने हज्जाज बिन मसरूर(मसरूक़)[2] को हुक्म दिया कि अज़ान दें। जब अक़ामत का वक़्त आया तो इमाम हुसैन[अ०] निकले, एक तहबन्द, एक चादर और जूतियाँ पहने हुए और अल्लाह की तारीफ़ के बाद फ़रमाया ''ऐ लोगो,[3] मैं तुम्हारी तरफ़ उस वक़्त तक नहीं आया जब तक कि तुम्हारे ख़त नहीं गए और क़ासिद[4] नहीं पहुँचे कि आइये हमारा कोई इमाम नहीं है। मुमकिन है कि आपके ज़रिये से ख़ुदा हमें सच्चाई व हिदायत के रास्ते पर कर दे। अब अगर तुम लोग इस बात पर क़ायम हो तो मैं आ ही गया हूँ और तुम मुझसे इत्मेनानी तरीक़े से फिर से अहद (प्रण) पैमान करो कि मेरा साथ दोगे। और अगर तुम ऐसा नहीं करना चाहते और तुम मेरा आना पसन्द नहीं करते हो तो मैं जहाँ से आया हूँ वहाँ वापस चला जाऊँ।'' यह सुनकर सब ख़ामोश रहे और किसी ने एक लफ़्ज़ भी जवाब में नहीं कहा। हज़रत ने मोअज़्ज़िन को हुक्म दिया कि अक़ामत कहो।

हुर की सेना के सामने दूसरा ख़ुतबा

अस्र की नमाज़ के बाद जबकि अब आगे रवाना होने की तैयारी भी हो चुकी थी। हज़रत ने दूसरा ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया। जिसे शैख़ मुफ़ीद और तबरी ने इस तरह लिखा है।

फिर हज़रत ने सलाम फेरा और उन लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह हुए और अल्लाह की तारीफ़ के बाद फ़रमायाः ''ऐ लोगों, तुम लोग अगर अल्लाह के डर से काम लो और सच्चे लोगों के हक़ को पहचानो तो अवश्य अल्लाह की रज़ामन्दी का अच्छा साधन होगा। हम रसूल[स०] के अहलेबैत हैं और इस मन्सब के ज़्यादा

हक़दार हैं उन लोगों की अपेक्षा जो इसका ग़लत दावा करते है। और जो तुम्हारे साथ ज़ुल्म व ज़्यादती का सुलूक करते हैं। और अगर तुम बहरहाल हमें न पसन्द करते हो और हमारे हक़ को नज़र अन्दाज़ करने पर तुले हुए हो और तुम्हारी राय, जो कुछ तुमने पत्रों में लिखा और दूतों से कहलवाया, अब इसके ख़िलाफ़ है तो मैं वापस चला जाऊँ।" अब हुर ने जवाब दिया कि बख़ुदा मैं नहीं जानता कि यह ख़त और दूत जिनका आप ज़िक्र करते हैं, क्या है? यह सुनकर इमाम हुसैन[अ०] ने अपने एक सहाबी से फ़रमाया "ऐ उक़बा बिन समआन, वह दोनों थैले तो ले आओ जिनमें उन लोगों के ख़त हैं" वह दोनों थैले निकाल कर लाए जो ख़तों भरे हुए थे। और वह ख़त सामने फैला दिये गए।

उसके बाद का एक अहम ख़ुतबा

तबरी की रवायत हैः-

अबू मख़नफ़ ने उक़बा बिन अबी ग़ैरार की ज़बानी नक़ल किया है कि इमाम हुसैन[अ०] ने अपने असहाब और हुर के साथियों के सामने मक़ामे बैज़ा पर ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया तो पहले अल्लाह की तारीफ़ की। फिर फ़रमाया "ऐ लोगों हज़रत पैग़म्बरे ख़ुदास० का इरशाद है कि जो कोई शख़्स किसी ज़ालिम बादशाह को देखे कि वह, अल्लाह ने जिन चीज़ों को हराम किया उनको हलाल बनाए हुए है, ख़ुदा के अहद को तोड़े हुए, पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] के सुन्नत की विरुद्ध है और अल्लाह के बन्दों के साथ गुनाह व ज़ुल्म और ज़्यादती के काम करता है और वह शख़्स उसको ज़बानी या अमली किसी सूरत से भी तबदील करने की कोशिश न करे तो अल्लाह के लिए मुनासिब होगा कि वह उस शख़्स को उसी ज़ालिम के दर्जे में दाख़िल करे। मालूम होना चाहिए कि यह लोग (शाम वाले) शैतान की इताअत के पाबन्द हो गए। अल्लाह की इताअत को छोड़ चुके हैं। उन्होंने झगड़ा-फ़साद ज़ाहिर किया है। अल्लाह ने जो सीमाएं बाँधी थीं उनको ख़त्म कर दिया है। जो माल सब मुसलमानों का है उसको अपनी मिलकियत समझ लिया है। अल्लाह के हराम किये हुए को हलाल और हलाल को हराम बना दिया है। मैं सबसे ज़्यादा इसका हक़ रखता हूँ कि इस वक़्त क्रान्ति पैदा करने की कोशिश करूँ। और तुमहारे पत्र मेरे पास आ चुके और तुम्हारे दूत पहुँच चुके, इस संकल्प के साथ कि तुम मुझे छोड़ोगे नहीं। मेरे साथ सहयोग को नहीं छोड़ोगे। अब अगर तुम अपने इस समझौते पर क़ायम होतो सीधा रास्ता हासिल करोगे और इस सूरत में मैं हुसैन जो अली और रसूले ख़ुदा की बेटी फ़ातिमा का बेटा हूँ मेरी जान तुम्हारी जानों से जुड़ी हुई है और मेरे बाल-बच्चे तुम्हारे बाल-बच्चों के साथ होंगे और जो मुझ पर गुज़रे उसमें तुमको शामिल रहना होगा और अगर ऐसा न करो और अपने समझौते को तोड़ दो और मेरी बैअत का कड़ा अपनी गर्दनों से उतार फेंको (मेरी बैअत तोड़ दो) तो यह कोई अजीब बात न होगी। तुमने ऐसा ही मेरे बाप, मेरे भाई और मेरे चचा के बेटे मुस्लिम के साथ किया। बड़ा धोखा खाने वाला है वह, जो तुम्हारे धोखे में आए। मगर उससे किसी और का नुक़सान न होगा तुम्हीं अपने हिस्से को हाथ से गंवा दोगे। और अपने नसीब को बर्बाद करोगे। और जो अहद तोड़ेगा अहद तोड़ने से अपना नुक़सान करेगा। और अल्लाह मुझे बहुत जल्द तुमसे बेग़रज़ कर देगा।"

रास्ते का एक और ख़ुतबा

तबरी लिखता हैः-

उक़बा बिन अबिल ग़ैरार का बयान है कि इमाम हुसैन[अ०] मक़ामे ज़ी हसम में खड़े हुए और अपने अल्लाह की तारीफ़ की। फिर फ़रमाया सूरते हाल जो है वह तुम देख रहे हो। दुनिया बदल चुकी है और अजनबी हो चुकी है। उसकी नेकियाँ रुख़सत हो गयीं हैं। और वह इन्तिहाई कड़वी व नागवार हो चुकी है। अब नहीं रह गया है उसमें से मगर बहुत कम जैसे पानी बाहाए जाने के बाद उसके अन्दर बच रहने वाले पानी के क़तरे और एक हक़ीर ज़िन्दगी जो ज़हरीली चरागाह जैसी है। क्या तुम्हारी नज़रों के सामने यह हालत नहीं है कि हक़ पर अमल नहीं किया जाता और बातिल से बाज़ नहीं रहा जाता। इस वक़्त जो सच्चा मोमिन हो वह तो सच्चे दिल से मरना चाहेगा। इसलिए कि इस सूरते हाल के मुक़ाबले में मरना मेरे नज़दीक सिवाए शहादत के और कुछ नहीं है। और ज़ालिमों के साथ ज़िन्दगी गुज़ारना सिवाए दिल

तोड़ने के और कुछ भी नहीं है।

ज़ुहैर बिन क़ैन की जवाबी तक़रीरः-

ऊपर लिखे हुए इमाम के ख़ुतबे के बाद तबरी के रावी ने कहा है किः-

ज़ुहैर बिन क़ैन बजली खड़े हो गए। आपने अस्हाब से कहा कि तुम कुछ कहते हो या मैं कहूँ? सबने कहा, नहीं तुम कहो। उन्होंने अल्लाह की तारीफ़ अदा की फिर कहा "ऐ फ़रज़न्दे रसूल! हम ने आपके इरशाद को सुना। अल्लाह आपका मक़सद पूरा करे। ख़ुदा की क़सम अगर दुनिया बाक़ी रहने वाली होती और हम हमेशा उसमें रहते मगर जुदाई उससे सिर्फ़ आपकी इमदाद और हमदर्दी की वजह से होती तब भी हम आपका साथ देने को इस दुनिया में रहने पर तरजीह (प्राथमिकता) देते।" ज़ुहैर की तक़रीर सुनकर इमाम ने उनके लिए नेकी की दुआ की।

नवीं मुहर्रम की शाम को या शबे आशूर इमाम का यादगार ख़ुतबा

नौ मुहर्रम को सुलह की बातचीत ख़त्म हो चुकी। उमरे साद ने इब्ने ज़ियाद के आदेश के मुताबिक़ फ़ौरन हमला कर दिया और हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने अपने भाई अबुलफ़ज़लिल अब्बास को भेज कर एक रात की मोहलत हासिल की। उस रात की मोहलत मिलने के बाद इमाम ने अपने तमाम अस्हाब को जमा करके अपना ऐतिहासिक ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया। जहाँ तक मुझे मालूम है कर्बला में सिर्फ़ यह एक ख़ुतबा है जो आप ने अपने साथियों की जमाअत के सामने पढ़ा है। हालांकि ख़ुतबे के उद्देश्यों यानि प्रलोभन देना, प्रेरित करना, जोश दिलाना, हौसला बढ़ाना, जज़्बात को उभारना इनके लिहाज़ से कर्बला के हालात में जितनी ख़िताबत के इन तक़ाज़ो की ज़रूरत थी वैसा मौक़ा बहुत कम आता है। ज़ाहिर है कि इतनी थोड़ी तादाद की जमाअत में लोगों की कमी को अगर किसी हद तक पूरा कर सकती है तो वह जोश की ज़्यादती और हिम्मत की बलन्दी। मसल मशहूर है कि "हुदि रा तेज़ तर बर ख़ां चू महमिल रा गराँ बीनी" यानी अगर बोझ ज़्यादा हो तो हुदि को ज़्यादा ऊँची आवाज़ से कहना चाहिए। इसके मुक़ाबले में जितनी रोकने वाली चीज़ें ज़्यादा हैं और हिम्मत के पस्त करने के अस्बाब ज़्यादा हों उतने ही क़ायद (सरदार) को ज़्यादा तक़रीरें करना पड़ेंगी। अगर दूर की मिसाल ढूँढने की ज़हमत गवारा न कीजिए तो थोड़े दिन पहले जर्मनी की लड़ाई की शिद्दत के हालात में चर्चिल की वज़ारत का शुरुआती ज़माना देख लीजिए जब कि हालात नामुवाफ़िक़ (प्रतिकूल) थे और तक़रीरों के ज़ोर पर जंग का इन्हेसार (निर्भरता) रह गया था।

इस हैसियत से देखिये तो एक नावाक़िफ़ इन्सान जिसको कर्बला के वाक़िआत के बारे में मालूम न हो यह ख़याल करेगा कि तीस हज़ार के मुक़ाबले में अपने तक़रीबन सौ सवा सौ लोगों को मैदाने जंग में साबित क़दम रखने के लिए उनके सरदार को लगातार अपनी ख़ुदा की दी हुई एजाज़े बयान (बोलने की अदभुत प्रतिभा) की तमाम ताक़तों के साथ पुरज़ोर अलफ़ाज़ और बिजली की सी कड़क और बादल की सी गरज के अन्दाज़ में तक़रीरें करना होती होंगी। मगर यह वाक़िआ है कि कर्बला में वह बहुत कम संख्या थोड़ी ही सही मगर अज़्म व इरादों (हिम्मत) की ताक़तों और ईमान की मज़बूती के तक़ाज़ों से इतनी भरी हुई थीं कि हज़रत इमाम हुसैन[अ०] को कर्बला पहुँचने के बाद से नवीं मुहर्रम की सेपहर तक आठ दिन और इसके बाद आशूर की रात और आशूर के दिन और आशूर के दिन के तक़रीबन 20-21 घण्टों में एक बार भी इसकी ज़रूरत नहीं हुई कि आप उनके सामने जोशो ख़रोश पैदा करने के लिए कोई ख़ुतबा इरशाद फ़रमाएं।

9 मुहर्रम की शाम को जो ख़ुतबा आपने इरशाद फ़रमाया है उसकी सूरत वह वयक्तिगत हैसियत रखती है जिसे हम चाहे जो कहें मगर प्रलोभन देना व प्रेरित करना तो कह ही नहीं सकते। शेख़ मुफ़ीद[रह०] लिखते हैं:-

इमाम हुसैन[अ०] ने शाम के क़रीब अपने अस्हाब को जमा किया। इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ०] का बयान है कि मैं उस मौक़े पर बीमार था मगर क़रीब आ गया ताकि सुनूँ हज़रत अपने अस्हाब से क्या फ़रमाते हैं। मैंने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार को सुना कि आपने फ़रमाया कि "मैं अल्लाह की बेहतरीन तारीफ़ का फ़र्ज़ अदा करता हूँ।

और आराम व तकलीफ़ हर हाल में उसका शुक्र बजा लाता हूँ। खुदावन्दा तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने हमें नबुव्वत के ओहदे की इज़्ज़त दी और इल्मे कुरआन की दौलत दी। और दीनी हक़ीक़त के बारे में समझ और अक़्ल दी। और हमें सुनने वाले कान, देखने वाली आँखें और समझने वाला दिल दिया। लेहाज़ा हमें शुक्र करने वालों में शुमार कर।" उसके बाद यह है कि "हक़ीक़तन मुझे नहीं मालूम कि दुनिया में कोई अस्हाब जो मेरे अस्हाब से ज़्यादा वफ़ादार और बेहतर हो। और न कोई अज़ीज़ मेरे अज़ीज़ों से ज़्यादा नेक काम करने वाला और बावफ़ा हो। तो अल्लाह तुम्हें मेरी जानिब से अच्छा बदला अता फ़रमाए। वाज़ेह होना चाहिए कि मेरे ख़याल में हमें उन दुश्मनों के हाथों एक ख़ूनी जंग का सामना होगा। हाँ, तो ख़ूब समझ लो कि मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ, तुम सब चले जाओ। बिल्कुल जायज़ तौर पर तुम्हारे लिए इसमें कोई हर्ज नहीं है और न मेरी तरफ़ से कोई ज़िम्मेदारी है। यह रात की तारीकी अब तुम्हारे सामने आ रही है। इसको अपना मरकब (सवारी) बनाओ और रवाना हो जाओ।" यह सुनना था कि आपके भाईयों, बेटों और भतीजों और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र के फ़रज़न्दों ने कहा "हम क्यों ऐसा करें? क्या इसलिए कि आपके बाद दुनिया में बाक़ी रहें? अल्लाह हमें वह दिन नसीब न करे।" सबसे पहले यह अलफ़ाज़ अब्बास बिन अली ने कहे फिर तमाम मजमे ने उनके साथ सहमति व्यक्ति की और उसी से मिलते जुलते हुए शब्द कहे।

इस रिवायत को तबरी ने दो तरीक़ों से नक़ल किया है। एक वह तरीक़ा जो ज़हाक बिन क़ैस मश्रिक़ी तक ख़त्म होता है यह इमाम हुसैन[अ०] के सहाबियों में से ऐसे शख़्स हैं जो बक़ौल तबरी वाक़िए कर्बला से ज़िन्दा बच गए। उसकी कैफ़ियत का बयान और उस पर तबसेरा (टिप्पणी) मौलाना मुज्तबा हसन साहब कामुनपुरी ने मक़तले ज़हाक बिन क़ैस की भूमिका में विस्तार के साथ किया है।

दूसरी रिवायत वह है जो शैख़ मुफ़ीद[रह०] की रिवायत की तरह इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ०] तक ख़त्म होती है।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] के ज़बानी जो रिवायत दर्ज की है वह तक़रीबन शैख़ मुफ़ीद[रह०] की रिवायत से बिल्कुल मिलती है। इख़्तेलाफ़ कुछ लफ़्ज़ों का है जिनमें सिर्फ़ विस्तार व संक्षेप वर्णन का फ़र्क़ है। मतलब पर कुछ असर नहीं पड़ता। और किसी-किसी में दोनों रिवायतों में से एक के नुस्ख़ों में कातिब या बीच के रावी की ग़लती या सन्देह मालूम होता है।

इसके बाद लेखक ने शैख़ मुफ़ीद[रह०] और तबरी की किताबों में जिस तरह लिखा है उसे अलग-अलग बयान किया है। और इस प्रकार की नौ रिवायतें लिखी हैं।

इनमें नम्बर-1, 2, 3, 6 और 9 पहली क़िस्म की रिवायतें हैं जिनके मतलब में कोई विरोध नहीं है। सिर्फ़ ज़रा सा लफ़्ज़ों का फेर या कमी ज़्यादती है। लेकिन न० 4 की रिवायत में मतलब में फ़र्क़ है और यह फ़र्क़ ऐसा है जिसे कातिब के सर थोपा नहीं जा सकता बल्कि रावियों के याद का इख़्तेलाफ़ है। किसी को वह फ़िक़रा याद रहा और किसी को यह। और इसमें ज़रा फ़ैसला भी मुश्किल है कि इमाम ने क्या फ़रमाया था।

पाँच में भी मायने में इख़्तेलाफ़ है और मेरे ख़याल में शैख़ मुफ़ीद[रह०] के यहाँ की लफ़्ज़ औफ़ा ज़रा ज़्यादा मुनासिब है।

सातवीं रिवायत में शैख़ मुफ़ीद[रह०] के यहाँ के अलफ़ाज़ का तर्जुमा है कि "मेरे ख़याल में उन दुश्मनों के हाथों एक ख़ूनी जंग का सामना होगा" और तबरी की रिवयात का तर्जुमा है कि "मेरे ख़याल में कल हमारे और उनके बीच फ़ैसलकुन दिन है।" यहाँ तबरी के अल्फ़ाज़ ज़्यादा सही मालूम होते हैं।

आठवीं रिवायत शैख़ मुफ़ीद के यहाँ है, "मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ।" और तबरी में है, "मैंने तुम्हारे लिए राय क़ायम की है।"

दूसरी रिवायत ज़हाक़ बिन क़ैस मश्रिक़ी की है यह निम्नलिखित है:-

जब रात हुई तो हज़रत ने फ़रमाया कि "यह रात तुम पर पर्दा डाल चुकी है। लेहाज़ा इसको अपनी सवारी बनाओ फिर हर एक तुम में से मेरे अज़ीज़ों मेंसे भी एक-एक का हाथ पकड़ ले। और फिर तुम लोग अपनी बस्तियों और शहरों में बिखर जाओ। उस वक़्त

तक के लिए जब इत्मिनान हासिल हो। इसलिए कि यह लोग बस मुझे चाहते हैं और अगर मुझे पा जाएं तो फिर किसी दूसरे की तलाश की तरफ़ मुतवज्जह न होंगे।" यह सुनकर आपके भाईयों, बेटों, भतीजों और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र के फ़रज़न्दों ने कहा कि "हम ऐसा क्यों करें? इसलिए कि आपके बाद बाक़ी रहें? अल्लाह हमें वह दिन कभी न दिखाए।" सबसे पहले यह आवाज़ अब्बास बिन अली ने बलन्द की और फिर सबने क़रीब-क़रीब यही कहा। इस पर इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया कि "ऐ अक़ील के फ़रज़न्दों! तुम्हारे लिए मुस्लिम का क़त्ल होना काफ़ी है। तुम चले जाओ तुम्हें मैं ख़ासतौर पर इजाज़त देता हूँ।"

उन्होंने कहा "इस सूरत में लोग क्या कहेंगे? यह कहेंगे कि हमने अपने बुज़ुर्ग और सरदार और अपने चचाओं की औलाद को जो बेहतरीन चचा थे छोड़ दिया। और उनके साथ न कोई तीर लगाया और न कोई नेज़ा और न तलवार से मुक़ाबला किया और ख़बर भी न ली कि आप पर क्या गुज़री! नहीं, बख़ुदा हम ऐसा नहीं करेंगे। बल्कि आप पर अपने जान व माल और घरबार को क़ुर्बान कर देंगे। और आपके साथ रह कर जंग करेंगे। ताकि जो कुछ आप पर गुज़रे उसमें हम शरीक रहें। ख़ुदा बुरा करे उस ज़िन्दगी का जो आपके बाद हो।"

इसमें और पहले की रिवायत में अलावा शब्दों में फ़र्क़ के, मतलब में भी फ़र्क़ है। मगर ऐसे जिनसे असल ख़ुतबे के मायने पर कोई असर नहीं पड़ता। इन दोनों तरह के इख़्तेलाफ़ की तफ़सील निम्नलिखित हैः-

1- पहली रिवायत में ख़ुतबे का वक़्त बताया है शाम के क़रीब जबकि दूसरी रिवायत में है जब रात हुई। आम शोहरत इसी दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हो गयी है कि यह ख़ुतबा आशूर की रात को हुआ है।

2- पहली रिवायत में ख़ुतबे के प्रारम्भिक हिस्से का ज़िक्र है जिसमें हम्दो सलवात व शुक्रे इलाही और अपने ख़ानदानी दर्जों के इज़हार के साथ अस्हाब की वफ़ादारी और अज़ीज़ों की क़राबत परवरी (अज़ीज़ होने का हक़ अदा करना), पर गर्व करने का ज़िक्र है। और यह कि कल जंग का मौक़ा या क़ुर्बानी का दिन है। और फिर यह कि "मैं तुम्हें इजाज़त देता हूँ।" और दूसरे लफ़्ज़ों में "बैअत तुम्हारी गर्दनों से उठाये लेता हूँ।"

दूसरी रिवायत में शुरु का हिस्सा नहीं लिखा गया है बस यहीं से शुरु किया गया है कि यह रात तुम पर पर्दा डाल चुकी है। और इस फ़िक़रे के मतलब में पहली और दूसरी रिवायत के बताए हुए वक़्त के लेहाज़ से फ़र्क़ हो जाता है। वहाँ चूँकि ख़ुतबे का वक़्त शाम का बताया गया है लेहाज़ा रात पर्दा डाल चुकी है के मायने यह होंगे कि रात इतनी नज़दीक है कि गोया आ ही गयी है। यानि क़रीब होने को ज़ाहिर करने के लिए भूतकाल लाया गया है। और दूसरी सूरत में हक़ीक़ी तौर पर यही मायने होंगे कि रात आ ही गयी है।

3- पहली रिवायत का मज़मून इस फ़िक़रे पर ख़त्म हो जाता है। मगर दूसरी रिवायत में इसके बाद यह इज़ाफ़ा है कि "हर एक तुम में से मेरे अज़ीज़ों से भी एक-एक का हाथ पकड़ ले और फिर तुम लोग अपनी बस्तियों और शहरों में बिखर जाओ। उस वक़्त तक के लिए कि जब तक इत्मिनान हासिल हो। इसलिए कि यह लोग मेरे तलबगार हैं और अगर मुझे पा जाएं तो फिर किसी दूसरे की तलाश की तरफ़ मुतवज्जह नहीं होंगे।" पहली रिवायत में इसका ज़िक्र नहीं है मगर सूरते वाक़िआ से ज़ाहिर है कि यह अलफ़ाज़ हज़रत ने ज़रूर इरशाद फ़रमाए होंगे इसलिए अज़ीज़ों और ख़ासतौर से हज़रत अबुलफ़ज़लिल अब्बास को भी अपने ख़यालात के इज़हार की ज़रूरत पड़ी।

4- हज़रत अबुलफ़ज़लिल अब्बास के जवाब के अलफ़ाज़ जिन से तमाम अज़ीज़ों ने इत्तेफ़ाक़ किया दोनों रिवायतों में एक से हैं। मगर दूसरी रिवायत में हज़रत ने औलादे अक़ील से जो ख़ासतौर से कहा है और उसका जवाब है पहली रिवायत में बयान नहीं है।

आमतौर पर यह रिवायत जो बयान होती है इसमें दोनों के हिस्से मिला दिये जाते हैं। और यह कार्यशैली बज़ाहिर ग़लत नहीं है। इसलिए किसी एक रिवायत में दूसरी रिवायत के मज़मून से इन्कार नहीं किया है। जबकि कुछ हिस्से ख़ुतबे के इस रिवायत में दर्ज हुए हैं और कुछ उसमें। सब इमाम ने इरशाद फ़रमाए

थे लेकिन संक्षेप में हर एक रावी ने कुछ हिस्से बयान किये और कुछ बयान करना ज़रूरी न समझे। पूरे ख़ुतबे में यह सब हिस्से सम्मिलित हों यह नामुमकिन नहीं है बल्कि संदर्भ को देखते हुए यह यक़ीनी है।

अस्हाबे इमाम की जवाबी तक़रीरें:-

तबरी ने लिखा है:-

अबू मख़नफ़ का बयान है कि मुझसे अब्दुल्लाह बिन आसिम ने कहा ज़हाक बिन अब्दुल्लाह मश्रिक़ी की ज़बानी उन्होंने बयान किया कि इमाम के ख़ुतबे को सुनकर अज़ीज़ों के जवाबों के बाद मुस्लिम बिन औसजा असदी खड़े हुए और कहा "क्या भला हम आपको छोड़कर चले जाएं और अल्लाह की बारगाह में आपके हक़ को अदा करके जवाब देही का सामान न करे? बख़ुदा मैं उन्हें नेज़े लगाऊँगा यहाँ तक कि उनके सीनों में अपना नेज़ा तोड़ दूँ और उन्हें तलवार लगाऊँगा जब तक कि उसका दस्ता मेरे हाथ में बरक़रार रहे और आप से जुदा न हूँगा यहाँ तक कि अगर मेरे पास कोई हथियार न होगा जिससे जंग कर सकूँ तो आपकी इमदाद में पत्थरों की बारिश करूँगा। यहाँ तक कि आपके साथ जान दे दूँ। और साद बिन अब्दुल्लाह हनफ़ी ने कहा "बख़ुदा हम आपको नहीं छोड़ेंगे यहाँ तक कि अल्लाह के इल्म में साबित हो जाए हमने रसूले ख़ुदा[स॰] के बाद आपके बारे में उनके हक़ को अदा किया। बख़ुदा अगर मुझे मालूम होता कि मैं क़त्ल किया जाऊँगा फिर ज़िन्दा किया जाऊँगा फिर ज़िन्दा जला दिया जाऊँगा फिर मेरी ख़ाक हवा में बिखेर दी जाएगी। यही मेरे साथ सत्तर मरतबा होगा जब भी मैं आपसे जुदा न होता। यहाँ तक कि आख़िरी बार भी मुझे मौत आपके सामने आती। फिर मैं ऐसा अब क्यों न करूँगा जबकि जानता हूँ कि एक दफ़ा का क़त्ल होना है। फिर वह इज़्ज़त व राहत है जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं।" और ज़ुहैर बिन क़ैन ने कहा "मुझे तो आरज़ू है कि मैं क़त्ल किया जाता फिर ज़िन्दा होता फिर क़त्ल किया जाता। यहाँ तक कि इसी तरह हज़ार दफ़ा मारा जाता और इस ज़रिये से अल्लाह क़त्ल होने की मुसीबत को आपके और आपके ख़ानदान के जवानों की जान से दूर कर देता।" ज़हाक़ का बयान है कि आपके अस्हाब में से कई आदमियों ने इसी से मिलती-जुलती तक़रीरें कीं। और सबने यह कहा कि बख़ुदा हम आपसे जुदा न होंगे बल्कि हमारी जानें आप पर फ़िदा होंगी। हम अपनी गर्दनें, पेशानियाँ और हाथ आपके ढाल बनाएंगे। हाँ, जब हम क़त्ल हो जायेंगे तो समझेंगे कि हमने अपना हक़ अदा कर दिया और जो फ़र्ज़ हमारा था वह पूरा हो गया।

इन तक़रीरों के शुरु में ज़हाक बिन अब्दुल्लाह की सनद के दोबारा ज़िक्र करने से ज़ाहिर होता है कि इन तक़रीरों का ज़िक्र इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ॰] वाली रिवायत में नहीं है। और शायद इसी लिए शेख़ मुफ़ीद ने उनका ज़िक्र नहीं किया मगर इमाम की रिवायत में भी इससे इन्कार नहीं किया गया है। बल्कि ख़ुद हज़रत के कुछ वाक्यों की तरह जो संक्षिप्त करने के लिए उस रिवायत में दर्ज नहीं हुए हैं यह हिस्सा भी मालूम होता है कि बयान नहीं किया गया है। लेकिन वह किसी तरह भी क़ाबिले इन्कार नहीं है।

दुश्मन की फ़ौज के सामने इमाम का ख़ुतबा

सुब्हे आशूर जब फ़ौज की सफ़ें खड़ी हो चुकी। शेख़ मुफ़ीद लिखते हैं कि:-

हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] ने अपनी सवारी का ऊँट मंगवाया। उस पर सवार हुए और ऊँची आवाज़ में फ़रमाया। इस तरह कि फौज के बड़े हिस्से तक आपकी आवाज़ पहुँच रही थी कि "ऐ इराक़ वालों, ऐ लोगों मेरी बात सुनो और जल्दी से काम न लो। मैं चाहता हूँ कि जो तुम्हारा हक़ मुझ पर है उसको अदा कर दूँ और तुम्हें नसीहत करके अपना उज़्र ख़त्म करूँ। इसके बाद अगर तुमने इन्साफ़ से काम लिया तो यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा और अगर इन्साफ़ न किया तो फिर जो करना हो वह कर लेना। और कोई हसरत दिल में उठा न रखना और न मेरे साथ रिआयत करना न मोहलत देना। मेरा मददगार वह अल्लाह है जिसने क़ुरआन नाज़िल किया और वही तमाम नेक लोगों का मददगार है।" इसके बाद आपने हम्दो सनाए इलाही अदा की और ख़ुदावन्दे आलम के शायाने शान तारीफ़ की और उसकी बड़ाई बयान की। हज़रत पैग़म्बरे ख़ुदा[स॰] और दूसरे अम्बिया और

मलाएका पर दुरूद भेजा इस शान से कि कोई बोलनेवाला आपके पहले और आपके बाद फ़साहतो बलाग़त में आपसे बढ़कर बोलते सुना नहीं गया। फिर फ़रमाया कि "मेरा नसब तो देखो। ग़ौर करो कि मैं कौन हूँ। फिर ज़रा अपने गरेबान में मुँह डाल कर अपने कामों को देखो और सोचो कि क्या मेरा क़त्ल और मेरी बेहुरमती करना तुम्हारे लिए मुनासिब है? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा और उनके वसी चचाज़ाद भाई और सबसे पहले उन पर ईमान लाने वाले शख़्स का फ़रज़न्द नहीं हूँ? क्या सय्यदुश्शोहदा हमज़ा मेरे बाप के चचा और जाफ़रे तय्यार जो क़ुदरत के दिये हुए बाज़ुओं से जन्नत में उड़ते हैं, मेरे चचा नहीं थे? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि पैग़म्बरे ख़ुदा ने मेरे और मेरे भाई के बारे में फ़रमाया कि यह दोनों जन्नत के जवानों के सरदार हैं। अब अगर तुम मुझ ही को सच्चा समझ लो और हक़ीक़तन (वास्तव में) जो मैं कहता हूँ वह सही है और बख़ुदा मैंने जब से मुझे मालूम है कि अल्लाह उसे नापसन्द करता है कभी भी झूठ नहीं बोला, तो ख़ैर और अगर तुम मुझे झूठा समझ लो तो तुम में से ऐसे लोग हैं जिनसे अगर तुम उसके मुताल्लिक़ पूछो तो वह तुम्हें बता देंगे। पूछ लो जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह अंसारी से अबू सईद ख़ुदरी से सुहैल बिन साद सऊदी से ज़ैद बिन अरक़म से अनस बिन मालिक से यह तुम्हें बताऐंगे कि उन्होंने ख़ुद यह हदीस रसूले ख़ुदा[स०] से मेरे और मेरे भाई के बारे में सुनी है। क्या यह तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोकने के लिए काफ़ी नहीं है?"

शिम्र ने कहा, "मै। ख़ुदा की एक हर्फ़ पर इबादत करता हूँ। अगर ये समझ में आए कि आप क्या कहते हैं।" हबीब बिन मज़ाहिर ने कहा "बख़ुदा मैं यह समझता हूँ और मैं गवाही देता हूँ कि तू ठीक कहता है। तू नहीं समझता कि हम क्या कह रहे हैं। तेरे दिल पर तो ख़ुदा ने मुहर लगा दी है।" फिर इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया कि "अच्छा अगर तुम्हें इसमें शक है तो क्या इसमें भी शक है कि मैं तुम्हारे नबी का नवासा हूँ। ख़ुदा की क़सम पूरब और पश्चिम के बीच में इस उम्मत बल्कि किसी दूसरी जमाअत में भी कोई नबी का नवासा मौजूद नहीं है। ज़रा सोचो तो क्या तुम मुझसे किसी के ख़ून का बदला चाहते हो। जिसे मैंने क़त्ल कर दिया हो? या किसी माल की माँग कर रहे हो जिसे मैंने बरबाद कर दिया हो। या किसी ज़ख़्म का बदला चाहते हो?" अब सब चुप हो गए। कोई कुछ न बोलता था। हज़रत ने पुकारा, "ऐ शीस बिन रबआी! ऐ हिजार बिन अबजर! ऐ क़ैस बिन अशअस! ऐ यज़ीद बिन हारिस। क्या तुमने मुझे नहीं लिखा कि मेवे पक गए हैं। बाग़ हरे भरे हैं और आपकी मदद के लिए एक तैयार फ़ौज मौजूद है।" क़ैस बिन अशअस ने कहा, "हम नहीं जानते आप क्या कहते हैं? बहरहाल आप अपने रिश्तेदारों के फैसले पर सर झुका दें। वह आपके साथ कोई नापसन्द बर्ताव कभी न करेंगे।" हज़रत ने फ़रमाया, "नहीं! बख़ुदा मैं ज़लील आदमियों की तरह अपने को तुम्हारे हवाले न करूँगा और न ग़ुलामों की तरह भाग जाऊँगा।" फिर आपने बलन्द आवाज़ से फ़रमाया "ऐ अल्लाह के बन्दों! अल्लाह से पनाह माँगना चाहिए जब तुम मुझे अपने हमलों का निशाना बनाओ। मैं पनाह माँगता हूँ हर उस मग़रूर (घमण्डी) से जो क़यामत पर ईमान न रखता हो।" इसके बाद आपने ऊँट को बिठा लिया और उक़बा बिन समआन को हुक्म दिया। उन्होंने ले जाकर उसे बाँध दिया।

तबरी में ये पूरा ख़ुतबा ज़हाक़ बिन क़ैस मश्रिक़ी की ज़बानी नक़ल किया है।

(जिल्द-6 सफ़हा 242-243) इसके अलफ़ाज़ शैख़ मुफ़ीद की बयान की हुई रिवायत से बिल्कुल मिलते-जुलते तो नहीं हैं बल्कि थोड़ा-थोड़ा फ़र्क़ शुरु से आख़िर तक है। फिर भी मतलब में बहुत कम फ़र्क़ पाया जाता है।

यह फ़र्क़ निम्नलिखित हैः-

1- ख़ुतबे के पहले दोनों जगह, इमाम के ख़ेमों के सामने ख़न्दक़ में भड़कते हुए शोलों को देखकर शिम्र का बदतमीज़ी के साथ बात करना और मुस्लिम बिन औसजा का इमाम से इजाज़त तलब करना कि मैं उसको तीर का निशाना बना दूँ और इमाम का यह फरमाना कि मैं अपनी तरफ़ से लड़ाई शुरु नहीं करना चाहता, लिखा हुआ है। शैख़ मुफ़ीद ने इसके बाद ख़ुतबे को इस तरह

शुरु किया है "फिर हज़रत ने अपनी सवारी का ऊँट मंगवाया।" तबरी ने कहा है कि "जब दुश्मन की फ़ौज इमाम से क़रीब आ गई तो आपने अपनी सवारी का ऊँट मंगवाया।"

(न० 2 और 6 तक सय्यदुल उलमा ने सिर्फ़ अरबी इबारतें लिखी हैं। उनका रूपान्तर नहीं दिया है। इसलिए इस तर्जुमे में उसको छोड़ दिया गया है।)

7- इरशाद में इसी के बाद हम्दो सनाए इलाही का ज़िक्र शुरु कर दिया गया है। तबरी ने उसके बाद यह लिखा है "रावी ने कहा कि जब हज़रत की बहनों ने आपकी आवाज़ सुनी तो रोने-धोने की आवाज़ बलन्द की और बेटियाँ भी रोईं। उनकी आवाज़ें बलन्द हुईं तो हज़रत ने अपने भाई अब्बास बिन अली और बेटे अली अकबर को भेजा और उनसे कहा कि औरतों को ख़ामोश करो। आइन्दा वह बहुत रोएंगी। जब वह दोनों उन्हें चुप कराने के लिए गए तो हज़रत ने फ़रमाया कि खुदा इब्ने अब्बास को जिन्दा रखे। रावी कहता है कि हमारा ख़याल है कि आपने रोने की आवाज़ सुनकर यह अलफ़ाज़ इसलिए कहे कि इब्ने अब्बास ने आपको औरतों के साथ ले जाने से मना किया था। जब वह आवाज़ें रुक गईं तो आपने हम्दो सनाए इलाही अदा की।

इस मौक़े पर शैख़ मुफ़ीद का इस हिस्से को न लिखना शक पैदा करता है कि शायद यह बढ़ा हुआ हिस्सा बाद में बढ़ाया गया है। सही सिर्फ़ इतना है कि औरतों ने रोने की आवाज़ बलन्द की और यह कि हज़रत ने जनाबे अब्बास व अली अकबर को उनके समझाने के लिए भेजा। क्योंकि यह औरतों की फ़ितरत है और नामूस की हिफ़ाज़त मर्दों का फ़र्ज़ है। इस लेहाज़ से यह बात क़यास (अनुमान) से सही मालूम होती है। मगर इस मौक़े पर इब्ने अब्बास को याद करना कि उन्होंने जो सलाह दी थी अब उसकी राय को सही होने का एहसास हो रहा है, बिल्कुल ग़लत है। इन अहले हरम का साथ होना कर्बला की घटना की बुनियादी हैसियत से एक ज़रूरी कड़ी की हैसियत रखता है। जिसे हज़रत इमाम हुसैन^अ० ने जिस तरह पहले ज़रूरी समझा उसी तरह वह बाद में ज़रूरी साबित हुआ। इस बारे में अगर ग़ौर करते तो बाद में खुद इब्ने अब्बास को महसूस होना चाहिए कि उन्होंने ग़लत राय दी थी। यह नहीं कि उनकी राय को सही मानने की इमाम हुसैन^अ० को ज़रूरत महसूस हुई।

तबरी की रिवायत में एक बात ज़्यादा है वह बड़ी महत्वपूर्ण है। इससे यह ज़ाहिर होता है कि इमाम हसन^अ० व इमाम हुसैन^अ० के बारे में पैग़म्बर की यह हदीस कि यह जन्नत के जवानों के सरदार हैं आम मुसलमानों में चाहे वह किसी फ़िरक़े व जमाअत का हो आमतौर पर कही जाती थीं। हज़रत का इस हदीस को कर्बला में पेश करना अक़ली तौर पर भी इस बात का सुबूत है कि ज़रूर लोग इसको आमतौर पर जानते थे। नहीं तो इतने सख़्त दुश्मनों को इतने बड़े मजमे में इसको पेश न किया जाता। सूरते हाल से भी ज़ाहिर है कि उनमें से एक आदमी ने भी इसके सही होने से इन्कार नहीं किया। इससे ज़ाहिर हुआ कि इस हदीस का पैग़म्बरे खुदा^स० की निस्बत से बयान करना बिल्कुल आम और क़तई हैसियत रखता था। इसके विरोध में किसी को दम मारने की गुन्जाइश नहीं थी।

शिम्र के बीच में बोलने पर हबीब बिन मज़ाहिर ने जवाब दिया है *(इस सिलसिले में सय्यदुल उलमा ताबासराह ने इमाम हुसैन^अ० की तक़रीर के बारे में तबरी और इरशाद शैख़ मुफ़ीद में जो थोड़ा सा फ़र्क़ है उसका उल्लेख किया है। और उसके बारे में अपनी राय भी दी है। इस विस्तार के साथ इसको यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए यह हिस्सा छोड़ दिया गया है। क्योंकि इससे असल तक़रीर पर कोई असर नहीं पड़ता)*।

ज़ुहैर बिन क़ैन की तक़रीर

(तबरी जिल्द-6 सफ़हा-293)

अबू मख़नफ़ का बयान है कि मुझसे अली बिन हन्ज़ला बिन साद शामी ने कहा अपनी क़ौम के एक ऐसे शख़्स की ज़बानी जो कर्बला में मौजूद था। जिसका नाम कसीर बिन अब्दुल्लाह शाबी था। वह कहता है कि जब हम ने हुसैन^अ० पर हमला किया तो ज़ुहैर बिन क़ैन हुसैन^अ० की फ़ौज से निकल कर हमारे सामने आए। वह अपने घोड़े पर सवार और लड़ाई के सब हथियारों से लैस थे। उन्होंने कहा, "ऐ कूफ़े वालों! डरो, ख़ुदा के

अज़ाब से डरो। यक़ीनन मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि वह अपने मुसलमान भाई को नसीहत करे और हम अभी तक भाई-भाई हैं। एक ही दीन और एक ही मिल्लत पर जब तक हमारे बीच तलवार नहीं चलती है। तुम हमारी तरफ़ से नसीहत के मुस्तहक़ हो। हाँ जब तलवार चलने लगेगी तो फिर, हमारे ताल्लुक़ात ख़त्म हो जाएंगे। और हम एक उम्मत और तुम दूसरी उम्मत हो जाओगे यक़ीनन अल्लाह ने हमको और तुमको आज़माया है अपने रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] की औलाद के साथ ताकि ज़ाहिर हो कि हमारा और तुम्हारा बर्ताव क्या होता है? हम तुम्हें दावत देते हैं कि तुम उनकी मदद करो और ज़ालिम उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का साथ छोड़कर अलग हो जाओ। क्योंकि तुम्हें उससे और उसके बाप से सिवाए बुराई के कभी कोई नतीजा नहीं मिल सकता। जब तक कि वह सत्ता में है वह तुम्हारी आँखों में सलाइयाँ फिरवाते, हाथ पैर और जिस्म के दूसरे हिस्सों को कटवाते, उन्हें फाँसी दिलवाते और तुम्हारे अच्छे आदमियों और क़ुरआन के हाफ़िज़ों को क़त्ल कराते रहे हैं। जैसे हज्र बिन अदी और उनके साथियों और हानी बिन उरवह और ऐसे ही दूसरे लोग।'' रावी कहता है कि यह सुनकर शाम की फ़ौज के लोग उन्हें गालियाँ देने लगे और उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद की तारीफ़ें और उसके लिए दुआएं करने लगे। और कहा, बख़ुदा हम न मानेंगे जब तक कि तुम्हारे सरदार हुसैन[अ०] और उनके साथ वालों को क़त्ल न करें। या उन्हें और उनके साथियों को ज़िन्दा इब्ने ज़ियाद के पास भेजें। ज़ुहैर ने उनसे कहा, ''ख़ुदा के बन्दों! फ़ातिमा ज़हरा[स०] की औलाद सुमय्या के बेटे से ज़्यादा मदद की हक़दार है। अच्छा, अगर तुम उनकी मदद नहीं भी करते तो ख़ुदा का वास्ता उन्हें क़त्ल तो न करो। बल्कि उनके मामले को सीधे यज़ीद पर छोड़ दो वो हुसैन[अ०] के क़त्ल के बिना भी तुमसे ख़ुश रह सकता है।'' यह सुनकर शिम्र बिन ज़िलजौशन ने उन्हें एक तीर लगाया और कहा ''चुप रहो! ख़ुदा तुम्हारी आवाज़ बन्द करे तुमने अपनी लंबी तक़रीर से हमें परेशान कर दिया।'' ज़ुहैर ने कहाः ''ऐ जाहिल और वहशी के बच्चे! मैं तुझसे बात नहीं कर रहा हूँ। तू तो जानवर है। बख़ुदा मेरे ख़याल से तुमको क़ुरआन की दो आयतें भी याद नहीं हैं। तुझे क़यामत के दिन बेइज़्ज़ती और अज़ाब के सिवा कुछ नहीं मिलेगा।''

शिम्र ने कहाः ''देखो थोड़ी देर में अल्लाह तुम्हें और तुम्हारे सरदार को क़त्ल करा देगा।'' उन्होंने कहा ''तू मौत से मुझे डराता है। बख़ुदा उनके साथ मरना मुझे तुम लोगों के साथ हमेशा की ज़िन्दगी हासिल करने से ज़्यादा पसन्द है।'' इसके बाद फिर वह फ़ौज की तरफ़ मुख़ातब हुए और बलन्द आवाज़ से कहा, ''ऐ ख़ुदा के बन्दों! अपने मज़हब के बारे में इस जाहिल अहमक़ और उसके ऐसे दूसरे लोगों के धोके में न आ जाओ। बख़ुदा शफ़ाअते मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स०] उन लोगों को नसीब नहीं हो सकती कि जो उनकी औलाद और अज़ीज़ों का ख़ून बहाएं और उनके मददगारों को क़त्ल करे।'' ज़ुहैर इतना कह चुके तो एक शख़्स ने (अस्हाबे हुसैन[अ०] में से) पुकार के कहा कि हज़रत इमाम हुसैन[अ०] फ़रमा रहे हैं कि बस चले आओ। अगर मोमिने आले फ़िरऔन ने अपनी क़ौम की नसीहत का हक़ अदा कर दिया और पूरी कोशिश से उन्हें हक़ की तरफ़ दावत दी तो यक़ीनन तुमने भी उन्हें नसीहत कर दी और पूरी कोशिश कर दी। मगर यह नसीहत, और कोशिश और हिदायत कोई फ़ायदा भी तो रखे।

हुर की तक़रीर

उमर बिन साद की फ़ौज से हुर बिन यज़ीद रियाही ने अलग होकर इमाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर जेहाद की इजाज़त हासिल की। इसके बाद लश्कर इब्ने ज़ियाद के सामने जाकर तक़रीर की। शैख़ मुफ़ीद लिखते हैं:-

उन्होंने कहा कि ''ऐ अहले कूफ़ा! तुम्हारी माएं तुम्हारे मातम में बैठें। क्या ग़ज़ब है कि तुम ने इस नेक किरदार बुज़ुर्ग को दावत दी। जब वह आए तो तुमने उनको छोड़ दिया और तुमने यह ख़याल ज़ाहिर किया कि तुम उनके सामने जानें निसार करोगे फिर ख़ुद उन्हीं के ख़िलाफ़ क़त्ल करने के लिए दौड़ पड़े। और तुमने उनकी साँस का रास्ता बन्द किया। उनका गला घूँट रखा और उनको हर तरफ़ से घेर लिया है कि उन्हें अल्लाह की

लम्बी चौड़ी ज़मीन में किसी तरफ़ जाने का रास्ता नहीं देते तो। वह तुम्हारे साथ में मिस्ल क़ैदी के बेबस हो गए हैं कि न अपने फ़ायदे का कोई सामान कर सकते न नुक़सान को रोक सकते हैं। तुमने उन्हें उनकी औरतों और बच्चों और तमाम अज़ीज़ों को रोक रखा है। इस बहती फ़ुरात के पानी से जिसे यहूदी, ईसाई और मजूसी और इराक़ के सुअर और कुत्ते तक भी पीते और लोटते हैं अब उन लोगों का यह आलम है कि प्यास ने उन्हें ज़मीन पर डाल दिया है क्या बुरा तुमने सूलूक किया है मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स॰] की औलाद के साथ! ख़ुदा करे, तुम्हें क़यामत की प्यास में सैराब होना नसीब न हो।" तक़रीर यहाँ तक पहुँची थी कि कुछ लोगों ने उन पर तीरों से हमला कर दिया। वह वहाँ से हट कर फिर इमाम के पास आकर खड़े हो गए।

तबरी ने भी इसका ज़िक्र किया है। (जिल्द-6, सफ़हा-245)

हन्ज़ला बिन असअद की तक़रीर

हन्ज़ला बिन असअद शबामी हाफ़िज़े क़ुरआन थे उनकी तक़रीर भी आयते क़ुरआन ही के साथ थी। तबरी ने लिखा है। (जिल्द-6 सफ़हा-254)

हन्ज़ला बिन असअद शबामी आए और इमाम के सामने खड़े हुए और पुकार कर कहने लगे (आयाते क़ुरआनी जिनका तर्जुमा यह है) "ऐ क़ौम! मैं तुम्हारे लिए डरता हूँ ऐसे लोगों के नतीजे से जिन पर ख़ुदा ने अज़ाब नाज़िल किया जैसे क़ौमे नूह और आद व समूद और जो उनके बाद थे। और अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म नहीं चाहता और ऐ क़ौम! मैं तुम्हारे लिए डर रहा हूँ रोज़े क़यामत के हौल से जिस वक़्त तुम भाग रहे होगे मगर ख़ुदा से कोई बचाने वाला न होगा। और जिसे अल्लाह गुमराह छोड़ दे उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं हो सकता" इसके बाद कि "ऐ क़ौम हुसैन को क़त्ल न करो नहीं तो अल्लाह तुम्हें अज़ाब का हक़दार कर देगा और फ़साद करने वाला हमेशा नाकाम रहता है। इमाम हुसैन[अ॰] ने फ़रमायाः "ऐ इब्ने असअद अल्लाह अपनी रहमत तुम्हारे शामिले हाल करे। अज़ाब के मुस्तहक़ तो यह उसी वक़्त हो गए जब उन्होंने तुम्हारी दावते हक़ को ठुकरा दिया और तुम्हारे ख़िलाफ़ चढ़ दौड़े। इस मक़सद से कि तुम्हारा और तुम्हारे अस्हाब का ख़ून बहाएं। हाँलांकि उन्होंने अब तो तुम्हारे नेक भाईयों को क़त्ल भी कर दिया है।"

शहीदे कर्बला की आख़िरी तक़रीर

यह तक़रीर ऐसे नाज़ुक मौक़े पर हुई थी जब किसी दूसरे तक़रीर करने वाले की न ज़बान में ताक़त हो सकती थी न दिल में कि वह इस वक़्त एक जुमला भी बतौर तक़रीर कह सके। वह वह मौक़ा है जब मुजाहिदे कर्बला पुश्ते फ़रस (घोड़े की पीठ) से ज़मीन पर आ चुका था। दिल पर तो सौ डेढ़ सौ दाग़ थे ही अब जिस्म पर सैकड़ों ज़ख़्म भी लग चुके हैं। तबरी ने लिखा हैः-

अबु मख़नफ़ का बयान है कि मुझ से सक़ाब बिन ज़ुहैर ने कहा हमीद बिन मुस्लिम की ज़बानी (हमीद से किसने बयान किया? इसका ज़िक्र नहीं हुआ है क्योंकि ख़ुद हमीद वाक़िए कर्बला में मौजूद न थे) रावी ने कहा कि हज़रत (रोज़े आशूरा) एक ख़ज़ का जुब्बा पहने थे और अमामा बाँधे थे और दसमां का ख़िज़ाब लगा हुआ था। कहा मैंने सुना आपको कि आप शहीद होने के क़ब्ल कह रहे थे उस हालत में कि जब पैदल एक निहायत बहादुर शहसवार की तरह जंग कर रहे थे। वारों को बचाते थे और दुश्मन पर हर मुनासिब मौक़े पर वार भी करते थे और सवारी पर हमला आवर होते थे। वह कह रहे थे "तुम मेरे क़त्ल पर बाहम एक दूसरे को तरग़ीब (प्रलोभन) दे रहे हो बख़ुदा मुझसे बढ़कर कोई ऐसा न होगा जिसके क़त्ल करने पर अल्लाह नाराज़ हो। बख़ुदा मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम्हारी इस तज़लील (बेइज़्ज़ती) व तौहीन की बदौलत ख़ुदा मुझे इज़्ज़त देगा। फिर तुम से मेरा बदला लेगा इस तरह कि तुमको ख़बर भी न होगी। बख़ुदा जब तुम मुझे क़त्ल कर लोगे तो ख़ुद तुम में फूट पड़ जायेगी। और तुम में ख़ूँरेज़ी होगी। फिर इतना ही नहीं बल्कि अज़ाब दर्दनाक (आख़िरत का) भी सामने आयेगा।"

कर्बला के बाद मुस्तक़बिल ने हज़रत इमाम हुसैन[अ॰] के एक-एक हर्फ़ को सही साबित कर दिया।

□□□

जेहादे मुख़्तार

आयतुल्लाहिलउज़मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

रसूल[स०] के परिवार की क्रूरता के साथ तबाही ने सच्चे मुसलमानों के हृदय में जो घाव डाल दिया था वह चुपचाप शान्त होने वाला न था और ख़ुदा की ओर से भी इन ज़ालिमों को अधिक समय तक छूट मिलना इलाहिया सिफ़त के विरुद्ध था अतः इसके आसार शहादते हुसैन के दो, तीन साल के भीतर दिखने लगे और कोशिशें आरम्भ हो गयी जिनमें एतिहासिक रूप से सबसे पहले जमाअत तव्वाबीन का नाम आता है।

यह वह लोग थे जिन्होंने पहले पहल हज़रत इमाम हुसैन से कूफ़ा की ओर पलायन करने की प्रार्थना की थी और जनमत को आपकी ओर मोड़ दिया था। मगर अन्त में फिर उनके विरुद्ध संघर्ष हो गया और वह विवश हो गये क्योंकि इब्ने ज़ियाद की हुकूमत बन जाने के बाद वह भूमिगत हो गये। अन्ततः हज़रत इमाम हुसैन[अ०] करबला पहुँचे और वहाँ शहीद हो गये और यह लोग कुछ समय की मजबूरी और कुछ कुव्वते नाइरादी के कारण आप तक न पहुँच सके मगर आपकी शहादत के हाल सुनकर उनके अन्तः कारण में छुपे हुए जज़्बाते फ़िदाकारी एक दम जागे अतः उन्होंने निर्णय लिया कि यह बदनामी का छत्ता गिराने हेतु हम उस समय तक चैन से न बैठेंगे, जब तक हम उन लोगों को जो क़त्ले इमाम में सम्मिलित हुए थे उनको क़त्ल न कर दें या इसके बदले अपनी जान न दे दें। अतः उन्होंने इस प्रकरण में दोस्ताने अहलेबैत में से पाँच नामी नेताओं को चुना 1- सुलेमान बिन सर्द ख़ज़ाई (अस्हाबे रसूल[स०]), 2-मुसय्यब बिन नजवा ख़ज़ाई (अस्हाबे अली[अ०]) प्रमुख थे। 3- अब्दुल्लाह बिन साद बिन नफ़ील अज़दी, 4-अब्दुल्लाह बिन दाल तमीमी, 5-रफ़ाअह बिन शद्दाद बजली। अतः यह पाँचों व्यक्ति और दूसरे प्रमुख लोग सुलेमान बिन सर्द ख़ज़ाई के मकान पर एकत्र हुए और मुसय्यब बिन नजवा ने प्रवचन दिया जिसमें कहा कि हम अपनी सभ्यता पर तथा अपनी जमाअत पर नाज़ और फ़ख़्र करते थे किन्तु जब ख़ुदा ने हमारी परीक्षा ली तो ज्ञात हुआ कि हमारे कथन एकदम ग़लत थे क्योंकि हम ने हज़रत इमाम हुसैन को आमन्त्रित किया और पत्र भेजा कि हम आपको सहयोग देंगे किन्तु जब आप पध ारे तो हमने अपनी जान चुराई और हम ने अपनी जानों, मालों अपनी कथनी से धर्म तथा कर्तव्य को पूरा नहीं किया और न अपने क़बीले को ही इस पर जुटाया अब हम ख़ुदा और रसूल को क्या उत्तर देंगे जबकि हमारा कोई भी उज़्र मानने के योग्य हो ही नहीं सकता केवल यही एक राह है कि क़त्ले हुसैन में जिस-जिस ने जिस सूरत में भाग लिया है उन सबको क़त्ल कर दें। और साथ-साथ ही मुसय्यब पुत्र नजवा और सुलेमान पुत्र सर्द दोनों की योग्यता का इक़रार किया।

(तबरी जिल्द-7 पेज-48)

या इस कार्य में स्वयं क़त्ल हो जाएं। अब आप लोगों को चाहिए कि कोई अपना नेता चुने जिसके आदेश से लड़ाई को जीता जा सके इनका व्याख्यान समाप्त होने पर रफ़ाअह बिन शद्दाद खड़े हुए और उन्होंने उनके प्रस्ताव पर प्रमोदन किया और कहा कि यदि आप उचित समझें तो आप ही को इस लड़ाई में नेता चुना जाए यदि न स्वीकार करें और अन्य लोगों की भी राय हो तो मैं अपने क़बीले के सब से वृद्ध सुलेमान बिन सर्द के सुपुर्द करूँ, जो रसूले ख़ुदा के सहाबी भी हैं और जिनके कृतव्य जो दीन के लिए उनके द्वारा निभाये गए हैं सभी को मालूम है यह अद्वितीय सूझबूझ वाले भरोसे योग्य व्यक्ति हैं। अब्दुल्लाह बिन दाल और अब्दुल्लाह बिन साद ने भी

अपने भाषणों में प्रस्ताव का समर्थन किया और अन्त में मुसय्यब बिन नजवह के अन्तिम व्याख्यान के बाद सर्व सम्मति से सुलेमान बिन सर्द को नेता चुना गया।

अब सुलेमान ने खड़े होकर एक भाषण दिया और इसको जुमे की नमाज़ के बाद दोहराते थे। निम्नलिखित है:-

हम लोग बड़ी उत्सुकता के साथ अहलेबैते रसूल[स०] के आगमन की राह देखा करते थे किन्तु जब वह आये तो हम लोगों ने कायरता का सुबूत दिया यहाँ तक कि हमारे देश में हमारे रसूल के फ़रज़न्द क़त्ल कर दिये गए और वह मदद के लिए लोगों को पुकार रहे थे किन्तु वहाँ कोई उनकी आवाज़ पर नहीं पहुँचा और ज़ालिमों के गिरोह ने उनको तीरों से छलनी कर दिया यहाँ तक कि आप शहीद हो गये और इतना ही नहीं विद्रोहियों ने शहादत के बाद आपका लिबास (परिधान) तक लूट लिया फिर अगर उठना है तो उठ पड़ो खुदा का ग़ज़ब अब चल पड़ा है पर अब तय कर लो कि अपने परिवार में उस समय तक न जाओगे जब तक अल्लाह की प्रसन्नता का समान न कर लोगे और खुदा की क़सम मेरे ख़याल में तो वह उस समय तक तुम से राज़ी नहीं हो सकता जब तक उनके क़ातिलों (हत्यारों) को उनके किये का दण्ड न दे दिया जाए या अपनी जान दे दी जाए, ख़बरदार मौत से न डरना क्योंकि जो मौत से डरता है वह ज़लील होता है। देखो तो जब बनी इसराईल के एक गिरोह ने गोशाला पूजन का जुर्म किया तो उनकी तौबा कैसे क़ुबूल हुई थी उनसे कहा गया कि तुम अपने नफ़्स को क़त्ल करने पर तैयार हो जाओ इस पर उस गिरोह ने क्या किया? वह ज़मीन पर बैठ गये और खुदा के निर्णय के लिए तैयार हो गये इसलिए कि उनको अपने जुर्म का एहसास था और यह मालूम हो गया था कि इसके बिना तौबा क़ुबूल नहीं हो सकती अब तुम भी अगर अपने को मुजरिम समझ रहे हो तो ऐसी ही क़ुर्बानी के लिए तैयार हो जाओ। उस पर उस जमाअत ने क्या किया? वह खुद को ज़मीन पर बैठा कर कुदरत के श्राप के लिए तैयार बैठ गये इसलिए कि उनको अपने जुर्म का सही एहसास था और यह मालूम हो गया था कि इसके बिना तौबा क़ुबूल नहीं हो सकती अब तुम भी अगर अपने को मुजरिम समझ रहे हो तो ऐसे ही त्याग के लिए तैयार हो जाओ तलवार तेज़ कर लो भालों की नोक सीधी कर लो और पूरे सामान से तैयार हो जाओ देर न होने पाये।

इस जोशीले व्याख्यान को सुनकर एकत्र जनों के अन्दर उफ़ान आया अनेक वक्ताओं ने खड़े होकर अपने विचार और जेहाद का निर्णय सुनाया अब्दुल्लाह पुत्र दाल तमीमी ख़ज़ान्ची नियुक्त हुए और तै पाया कि उनके पास रुपया एकत्र किया जाए और जोश व पक्के इरादे की यह भीड़ चली गई।

अब सुलेमान ने मदाएन माऊद पुत्र हुज़ैफ़ा पुत्र यमान और अन्य स्थानों पर कुछ दूसरे लोगों को भी पत्र लिखे इन पत्रों के मज़मून का मुख्य भाग निम्नलिखित है:-

शियाने अहलेबैत ने इस आशय पर ग़ौर किया है जो उनसे प्रकट हुआ फ़रज़न्दे रसूल के बारे में जिन्हें निमन्त्रण किया गया तो वह आ गये उन्होंने जब मदद का निमन्त्रण दिया तो उसका पालन नहीं किया गया और उन्होंने वापस जाना चाहा तो उन्हें रोका गया और उन्होंने संरक्षण चाहा तो इनकार कर दिया गया और उन्होंने चाहा कि उनको उनके हाल पर छोड़ दें, किन्तु उन्हें दुश्मनों ने न छोड़ा और उन पर आक्रमण करके शहीद कर डाला और उनके कपड़े जो पहने थे लूट लिये और लाशे पाक को वहीं छोड़ दिया अब हमारी जमाअत ने इस बात पर विचार किया है और उन्हें बड़े ज़ोर से यह एहसास हुआ है कि उनसे इस मासूम की मदद न करने में बड़ा पाप हुआ है जिसका प्राश्चियत यही है कि उनके हत्यारों को मार डालें या स्वयं अपने प्राण दे दें। अब यह सब तैयार हो गये हैं। अतः आप लोग भी तैयार हो जाएं हम ने इस कार्यक्रम के लिए एक तिथि और स्थान की घोषणा कर दी है जिसमें सबको एकत्र होना है। तिथि एक रबीउस्सानी और स्थान नख़ीला।

यह पत्र सआद को पहुँचा और उन्होंने मदाएन के शियों को पढ़कर सुनाया और खुद व्याख्यान दिया जिसमें कहा कि यह सत्य है कि आप लोग हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की मदद करने की इच्छा रखते थे और जैसे ही

उनके पधारने की सूचना मिलने पर परन्तु उनके पास जाने का इरादा रखते थे। किन्तु उनकी अचानक शहादत की सूचना मिली जिससे विवश हो गये अन्ततः अल्लाह के यहाँ आप लोगों को नियतों का फ़ल मिलेगा अब दशा यह है कि आप के दोनों भाइयों ने बेदीनों का सामना करने के लिए आप से मदद माँगी है और सोचना है इसके लिए क्या करना चाहिए सभी लोगों ने कहा हम अवश्य उनकी मदद करेंगे और सर्वसम्मति से दुश्मनाने अहलेबैत से जेहाद करेंगे, अतः सआद पुत्र हुज़ैफ़ा ने सलमान पुत्र सर्द के ख़त का उत्तर मदद करने के इक़रार के साथ रवाना कर दिया इसी प्रकार दूसरों के भी उत्तर आ गए।

यह सब कार्यक्रम गुप्त रूप से हो रहे थे। यहाँ तक कि बड़ी संख्या इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो गई जिसकी भनक किसी को न हुई तब हम सब 61 हिजरी से लेकर रबीउल अव्वल 63 हिजरी यानी यज़ीद के मरने तक ऐसे हालात न बन सके कि इस क्रम में कोई कार्य किया जाता मगर यज़ीद के मरने के बाद इस कार्यक्रम में जागरुकता उत्नन्न हुई अब लगभग प्रवेक्ष रूप से प्रचार होने लगा यहाँ तक कि ये कार्यक्रम मिस्र तक पहुँच गया और उबैदुल्लाह पुत्र अब्दुल्लाह मिस्री के व्याख्यानों ने जिनमें शहादते इमाम हुसैन[अ०] का ब्योरा कठिन शब्दों में दिया जाता था वहाँ भी उत्साह उत्पन्न हो गई।

एक रबीउल अव्वल 65 हिजरी को यह लोग नख़ीला स्थान पर एकत्र हो गए तो यह देखकर किसी हद तक दुख हुआ कि जिन लोगों ने मदद का प्रण लिया था जिनके नाम सूची अंकित हो चुके थे उनकी संख्या 16 हज़ार थी किन्तु उस तिथि पर उपस्थित केवल चार हज़ार थे, किन्तु यह लोग पक्के इरादे के थे इसलिए संख्या कम होने की चिन्ता किये बिना कार्यक्रम करने का निर्णय लिया।

कुछ लोगों का कहना था कि हुसैन[अ०] के हत्यारे अभी कूफ़ा में हैं इनसे यही समझ लेना चाहिए किन्तु सुलेमान की राय यह हुई कि सबसे बड़ा इमाम हुसैन[अ०] का हत्यारा जो इस समय मौजूद है मौजूद है, इब्ने ज़ियाद, है जिसने सुल्हनामे की कोई शर्त न मानी और कहा कि जब तक इमाम हुसैन बिना शर्त इताअत न कर लें इनको अमान नहीं मिल सकती, अतः उसके मुक़ाबले के लिए चलना चाहिए और उसे प्राप्त कर लिया जाये तो फिर इन छोटे आदमियों को सज़ा देना कौन कठिन समस्या है। सभी ने इनकी राय मान ली।

शुक्रवार 5 रबीउस्सानी 65 हिजरी को रात के अन्धेरे में यह लोग शाम के इरादे से चल दिये सबसे पहले इन लोगों ने क़ब्रे इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत की इस समय इनके रोने और बयान करने का दृश्य अजब था और प्रत्येक व्यक्ति इस इच्छा से दुखी था कि अच्छा होता कि आशूरा के दिन वह इमाम हुसैन[अ०] के साथ होता और शहादत का दर्जा पाता एक दिन और एक रात इसी प्रकार इन लोगों ने नौहा, मातम, फ़रियाद और तौबा में गुज़ारा अन्त में जज़्बात के उथल-पुथल के साथ सभी लोग क़ब्रे इमाम हुसैन[अ०] से विदा हुए, जिसके साथ सुलेमान पुत्र साद और अन्य सरदारों के बड़े भाषणों ने उनमें उत्तेजना को तीव्र कर दिया।

बुध के दिन 7 जमादिल अव्वल को प्रथम लड़ाई हुई बैरियों की सेना संख्या 12 हज़ार और यह केवल चार हज़ार फिर भी इन्हीं की विजय हुई फिर दूसरे दिन आठ हज़ार सेना और आ गई जिसे उबैदुल्लाह पुत्र ज़ियाद ने भेजा घनघोर, घमासान युद्ध हुआ जो रात तक चलता रहा मुजाहिदीनों में घायलों की सख़्या अधिक थी। तीसरे दिन बैरियों की फौजी संख्या अधिक और मुजाहिद की कम हो गई। कुछ कमज़ोरी आ गई किन्तु मुक़ाबला होता रहा फिर कायर फौजियों ने तीर चलाना आरम्भ किये और एक तीर सुलेमान पुत्र सर्द को आ कर लगा और वह शहीद हो गए उस के बाद लशकर का अलम मुसय्यब पुत्र नजवह ने लिया और बड़ी बहादुरी से कई हमले किये मगर अन्त में वह भी शहीद हुए इनके बाद अब्दुल्लाह पुत्र साद पुत्र फज़ील ने अलम संभाला और क़बीला अज़दर की जमाअत को साथ लेकर मुक़ाबला किया उसी समय मदाएन के तीन सवार आए जिन्होंने बताया कि मदाएन और बसरा से कुमक रवाना हो चुकी है मगर यहाँ हालत इतनी बिगड़ चुकी थी कि इन मुजाहिदीन की ज़िन्दगी में इस कुमक के पहुँचने की

उम्मीद न थी आख़िर वह आए सवार भी जंग करते-करते शहीद हो गए। इसके बाद अब्दुल्लाह पुत्र साद और फिर अब्दुल्लाह पुत्र दाल भी शहीद हो गए।

अब शाम हो गई थी इसलिए जंग बन्द कर दी गई नामज़द सरदारों में अब सिर्फ़ रफाअह पुत्र शद्दाद बाक़ी थे मगर अब हालत यह थी कि इनकी संख्या चार हज़ार से लड़कर केवल कुछ सौ रह गई थी और इनमें से भी अक्सर ज़ख़्मी थे और जंग के क़ाबिल न थे अतः मुक़ाबले में कामयाबी न देखते हुए रात के अंधेरे में मैदान छोड़ दिया इस प्रकार हुसैन[अ०] के हत्यारों का प्रथम प्रयास समाप्त हुआ।

दूसरा प्रयास जो कामयाब हुआ वह जनाब मुख़्तार पुत्र अबी उबैदा सक़फ़ी के हाथ से पूरा हुआ मगर मुख़्तार और सुलेमान पुत्र सर्द ख़ज़ाअी के कार्य शैली में अन्तर था।

सुलेमान पुत्र सर्द ख़ज़ाअी की सरकर्दगी में जमाअते तव्वाबीन ने जो क़ातिलाने हुसैन से बदला लेना चाहा था उसमें उन्होंने सीधे शाम की हुकूमत के विरुद्ध महाज़ छेड़ा था और वह अपनी कम संख्या की बिना पर उसे कोई ख़ास कोई माद्दी हानि नहीं पहुँचा सके मगर जनाब मुख़्तार ने महाज़ खुद कूफ़ा में क़याम किया और उन लोगों को जो कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में थे उन्हें क़त्ल किया यहाँ तक कि इब्ने ज़ियाद तक जो इस क्रम का सबसे बड़ा दोषी था, उनके हाथ से क़त्ल हुआ इस प्रकार उस आशय की बड़ी हद तक पूर्ति हुई जिसके लिए इस्लामी दिलो दिमाग़ बेचैन थे। मुख़्तार पुत्र उबैदुल्लाह सक़फ़ी ख़ानदानी एतेबार से अरब के रईसों में से थे। इनके पिता अबुउबैदा इस्लामी लड़ाइयों के क्रम में तसख़ीर ईरान से सम्बन्ध अक्सर शरीक हो चुके थे, अतः हसरावी अबीद की जंग इन्हीं के नाम से जुड़ी है और खुद मुख़्तार अहलेबैत रसूल के हमदर्द की हैसियत से ख़ास तौर पर प्रसिद्ध थे। यद्यपि जो पत्र हज़रत इमाम हुसैन[अ०] को कूफ़ा से भेजे गए थे उनमें इनका नाम नहीं दिखाई पड़ता, ताहम जब मुस्लिम पुत्र अक़ील कूफ़ा पहुँचे थे तो आप मुख़्तार के घर पर ही रुके थे। इसके बाद जब इब्ने ज़ियाद का कूफ़े पर क़ब्ज़ा हुआ और अफ़रातफ़री हुई तो उस मौक़े पर मुख़्तार कूफ़े में नहीं थे बल्कि अपनी ज़मीनदारी में किसी गाँव में गये थे अतः मुस्लिम उनके घर से हटकर हानी के घर ठहरे फिर हानी के पकड़े जाने पर मुस्लिम को जेहाद के लिए निकलना पड़ा और अन्त में मुस्लिम और हानी दोनों शहीद हुए उसके बाद अम्र पुत्र हारिस ने रायद अमान इस एलान के साथ दी कि जो इस झण्डे के नीचे आ जायेगा उसका जान व माल बच जायेगा। उस वक़्त मुख़्तार कूफ़ा वापस पहुँचे और अम्र पुत्र हारिस के अमान रायद के नीचे मगर इनकी तरफ़ से हुकूमत कूफ़ा इस दर्जा बदज़न थी कि उन्हें इस झण्डे के नीचे पहुँच जाने पर अमान न मिल सकी इब्ने ज़ियाद ने अपने दरबार में बुलाकर अपनी छड़ी से इनके चेहरे पर ऐसी चोटें लगाईं कि इनकी आँख फूट गई और फिर इन्हें क़ैदख़ाने में डाल दिया चुनानचे जब हज़रत इमाम हुसैन[अ०] की शहादत हुई तो वह कूफ़े में क़ैद थे और सम्भवतः क़त्ल कर दिये जाते मगर उनकी बहन अब्दुल्लाह पुत्र उमर की पत्नी थी और यद्दीद अब्दुल्लाह पुत्र उमर भी शुरु में यज़ीद की बैअत से इनकार करते थे, किन्तु शहादत इमाम हुसैन[अ०] मालूम होने के बाद उनका हौसला पस्त हो गया था और वह यज़ीद की तरफ़ झुकने लगे थे। उधर यज़ीद आमतौर पर आलमे इस्लामी की ख़फ़गी और बेज़ारी से प्रभावित होकर हर ऐसे आदमी की दिलजोई और मुराआत करना चाहता था कि जो कम से कम उसकी हुकूमत के विरुद्ध बोलने से रोका जा सकता था अतः इस समय पर अब्दुल्लाह पुत्र उमर की किसी बात को रद करके उनको अपने से बरगश्ता ख़ातिर करना किसी तरह से मुनासिब न समझता था। अतः अब्दुल्लाह पुत्र उमर ने मुख़्तार की बहन के बहुत कहने से मजबूर होकर यज़ीद को मुख़्तार की रिहाई के लिए पत्र लिखा और यज़ीद ने तुरन्त अब्दुल्लाह पुत्र ज़ियाद को ताकीद की कि मुख़्तार को रिहा कर दिया जाए इस तरह इब्ने ज़ियाद इनको रिहा करने पर मजबूर हो गया मगर शर्त कर दी कि तीन दिन के अन्दर कूफ़े को छोड़ देना वरना तुम्हें क़त्ल कर दिया जायेगा, अतः तीन दिन के अन्दर मुख़्तार कूफ़े से हिजाज़ की तरफ़

चले गए एक साल से ज़्यादा हिजाज़ में कई जगहों पर घूमते रहे और इस दौरान वह बराबर कहते रहते थे कि मुझे हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के ख़ून का बदला लेना है जो मैं लेकर रहूँगा जब दमिश्क़ की नौजवान फ़ौजों ने हसीन पुत्र नमीर की सरकर्दगी में अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के मुक़ाबले में फ़ौजकशी की और मक्का मोअज़्ज़मा का घेराव किया तो मुख़्तार उस वक़्त मक्का में थे और 3 रबीउलअव्वल 64 हिजरी को जिस दिन ख़ान-ए-काबा में आग लगाई गई और शाम की फौजें शहर मक्का में दाख़िल हुईं तो मुख़्तार ने शाम वालों के मुक़ाबले में तन तनहा बहुत जुराअत और हिम्मत के साथ सख़्त जंग की यहाँ तक कि शाम वालों की हार हुई इसी बीच यज़ीद की हलाकत की ख़बर आई और शाम की फ़ौजें वापस चली गयीं। मुख़्तार इसके बाद पाँच महीने से कुछ ज़्यादा अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के पास मक्का मोअज़्ज़मा में ठहरे रहे।

इतने समय में कूफ़े की हुकूमत में इन्क़ेलाब आया और कूफ़े वाले इब्ने ज़ियाद के नायबे हुकूमत अम्र पुत्री हारिस को निकाल चुके थे आरज़ी तौर पर आमिर पुत्र मसऊद को हाकिम बना दिया था जिसने अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर की इताअत कर ली और कूफ़े वालों से इब्ने ज़ुबैर की ख़िलाफ़त मनवाई मगर अभी तक कूफ़ा में नज़्मो नस्क़ पूरे तौर पर क़ायम नहीं हो पाया था।

मुख़्तार को यह समय क़ातिलाने हुसैन[अ०] से बदला लेने के मुताल्लिक़ अपने मंसूबे की तकमील के लिए बहुत अच्छा मालूम हुआ वह कूफ़े की तरफ रवाना हो गये और वहाँ पहुँच कर मुख्य शिया लोगों से अपनी मुहिम के बारे में बातचीत की और बहुत से आदमी उनकी राय से मुत्तफ़िक़ हो गये।

किन्तु जब सुलेमान पुत्र सर्द ख़ज़ाई जमाअते तव्वाबीन के साथ शामियों के मुक़ाबले को निकले उस समय मुख़्तार को फिर क़ैद कर दिया गया।

सुलेमान की शहादत के बाद जब उनकी जमाअत के शेष लोग जो संख्या में कम थे रफाआ पुत्र शद्दाद के साथ कूफ़े में आये तब मुख़्तार जेल में थे आख़िर में अब्दुल्लाह पुत्र उमर ने फिर अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर और इब्राहीम पुत्र मुहम्मद पुत्र तलहा को जो उस समय अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर की ओर से कूफ़े का हाकिम था मुख़्तार की रिहाई के लिए पत्र लिखा, जिसके बाद वफ़ादारी की क़समें लेने के बाद मुख़्तार को छोड़ दिया गया।

इसके बाद अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर ने इब्राहीम पुत्र मुहम्मद को हटा दिया और अब्दुल्लाह पुत्र मतीअ को कूफ़े का गवर्नर बनाया जो बृहस्पतिवार 15 रमज़ान 65 हिजरी को कूफ़े में आया।

अब मुख़्तार के साथ बहुत से प्रमुख और योद्धा जुड़ चुके थे मगर मालिके अशतर के पुत्र इब्राहीम की एक प्रसिद्ध शख़सियत थी जिनका इस कार्यक्रम में लाना आवश्यक समझा जाता था अतः इब्राहीम को पूरी तरह से इस इरादे को बताकर उन्हें भी साथ लाया गया जिससे मुख़्तार को बड़ी कुव्वत मिली।

अब बराबर मुख़्तार इब्राहीम के यहाँ आने जाने लगे रोज़ाना शाम के समय इब्राहीम उनके यहाँ जाते थे अन्त में यह राय हुई कि बृहस्पतिवार 14 रबीउल अव्वल 66 हिजरी को कार्य प्रारम्भ कर दिया जाए।

इन लोगों ने आपस में सलाह की कि हमको क़ातिलाने हुसैन[अ०] से बदला लेने के लिए दमिश्क़ जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि जिन लोगों ने इमाम हुसैन[अ०] का क़त्ल किया था यहीं हैं अतः इनसे हमको बदला लेना चाहिए किन्तु इस सूरत में इब्ने ज़ुबैर की हुकूमत से इनकी भिड़न्त आवश्यक थी इसलिए कि क़ातिलाने हुसैन[अ०] का सीधा सम्बन्ध यद्यपि हुकूमते शाम से था किन्तु यह इस समय कूफ़े के रहने वाले थे इनसे बदला लेने का अर्थ अपने हाथ में क़ाबू न लेना था और ज़ाहिर है कि हुकूमते वक़्त को इस सूरत में अपने निज़ाम की रक्षा के लिए प्रबन्ध करना था इस शहर के रहने वाले थे अतः मुख़्तार और उनकी जमाअत के लिए क़ातिलाने हुसैन[अ०] से अपने मुताबिक़ बदला लेना सम्भव नहीं था जबकि वह कूफ़े की मौजूदा हुकूमत को समाप्त कर एक खुद मुख़्तार हुकूमत न बना ले अतः इस नज़रिये के अनुसार उनका हुकूमत में ज़ुबैर के पुत्र से युद्ध आवश्यक हुआ।

फलस्वरूप अब्दुल्लाह पुत्र मतीअ को समय के ना सम्भव देखकर कूफ़े से भाग गया इस प्रकार से

मुख़्तार की हुकूमत बन गई और मुख़्तार हुकूमत पर छा गए एक ओर हुकूमते शाम जिससे सीधा क़त्ले हुसैन[अ०] का सम्बन्ध था और दूसरी ओर जुबैर के पुत्र की हुकूमत जो कूफ़े में अपना पुनः हुबूल क़ायम करना चाहता था मुख़्तार से जंग करना ज़रूरी समझता था। इस सूरते हाल को देखते हुए इन अलामात की सच्चाई के बारे में बहुत कुछ समझ सकते हैं जो मुख़्तार के वास्ते अतः इतिहास में लिख दिये गए हैं। वैसे वह इल्मेग़ैब जानते थे जानते थे वह कहते थे कि मुझ पर जिबरील आते हैं उन्होंने मुहम्मद हनफ़िया की महदवियत का एलान करके ग़लत तौर पर अपने को उनका दूत बताया उनकी ओर से जाली पत्र बनाकर इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर को अपना हम ख़याल आदि समझते हैं कि यह सब हुकूमतों की ओर से इनके विरुद्ध प्रचार था जिसकी मिसालें निरन्तर इतिहास में हमारे सामने आती हैं यहाँ तक कि अब्दुल्लाह पुत्र जुबैर को यज़ीद और उसके सलाहकार लक़हद के नाम से याद करते थे फिर अजर मुख़्तार के विरुद्ध इस कबील के शब्द मिलते हैं तो उन्हें कैसे सच्चा समझा जा सकता है हमारे नज़दीक इन आरोपों का झूठा होना इन लोगों पर निगाह करने से सिद्ध हो जाता है जो मुख़्तार के साथ थे और बराबर साथ रहे जैसे अबुतुफैल आमिर पुत्र वासला पुत्र असकाए काशानी की जो सहाबिए रसूल थे इसी तरह अबु उसमान नहदी फिर रफ़ाआ पुत्र सद्दाद यज़ीद इब्ने अनस अब्दुल रहमान पुत्र साद पुत्र क़ैस और क़ारिब पुत्र आजिब और अहमर पुत्र शकीला आदि यह लोग सब दूरदर्शी और दीनदार लोग थे।

इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर के लिये यह मान भी लिया जाए कि उन्हें ग़लत तहरीर दिखाकर अपना बना लिया था तो बाद मुख़्तार के साथ क़रीब-क़रीब रहने के उपरान्त उन्हें मुख़्तार के अक़ायद व आमाल मालूम नहीं हुए और उसके बाद वह ख़िलाफ़ न हो जाते? फिर मान लिया जाए कि उन्हें हर समय साथ रहने के उपरान्त इन बातों की जानकारी नहीं हुई तो आख़िर इन कहने वालों को इन पर मालूम कैसे हो सके जो मुख़्तार के साथ वैसे ही सम्बन्ध न रखते।

मुख़्तार का खुलूस तो इससे ज़ाहिर होता है कि हुकूमत पाने के बाद भी मुख़्तार और उनके साथियों ने अपने इरादे को नहीं छोड़ा और चुन-चुन कर उन्होंने क़ातिलाने इमाम हुसैन[अ०] को क़त्ल करना आरम्भ कर दिया जिस प्रकार उनका मुख्य नारा था कि आले सिराते हुसैन इसी के मुताबिक़ इनका अमल ज़ाहिर हुआ।

इसकी शर्तें इस तरह हो गईं कि अब्दुल्लाह पुत्र ज़ियाद शाम की फौज लेकर मूसल पर आक्रमण कर दिया मुख़्तार ने उसके मुक़ाबले के लिए तीन हज़ार की जमाअत के साथ खमीद पुत्र इन्स को भेजा इस फ़ौज ने दुश्मन के लश्कर को हरा दिया मगर मारक-ए-जंग में यज़ीद पुत्र इन्स की जो पहले से बीमार था मृत्यु हो गई और बाक़र पुत्र आजिब ने फौज दुश्मन कसरत और अपनी क़िल्लते तादाद के कारण अपने अपने सरदार की मृत्यु के बाद इस मुहिम को कूफ़े से और मदद मंगवाने तक रोके रखी मुख़्तार को यह मालूम हुआ तो उन्होंने इब्राहीम पुत्र मालिक अशतर को सात हज़ार की फ़ौज के साथ वरका की मदद के लिए मूसल की ओर भेजा कूफ़े के सरदारों ने जो लगभग सब ही वह लोग थे जो हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में जंग में शरीक हो चुके थे इस मौक़े को ग़नीमत जानकर कि इब्राहीम कूफ़े से बाहर गए हुए हैं और मुख़्तार अकेले हैं एक साथ होकर बग़ावत कर दी और मुख़्तार से जंग शुरु कर दी इनके निम्न नाम साफ़-साफ़ मिलते हैं शोश पुत्र खई, शिम्र पुत्र जिल् जौशन, मुहम्मद पुत्र अस्अद, अज़हर पुत्र क़ैस, हजार पुत्र अल्जज़वीर, शज़ीद पुत्र हारिस पुत्र रोयम शीवानी अम्र पुत्र हजाज़, जुवैदीइन में से कोई भी नाम कर्बला प्रकरण को पढ़ने वालों के लिए नया नहीं है।

मुख़्तार ने अपने साथ वाली जमाअत के साथ उन लोगों का साधारण मुक़ाबला जारी रखा और एक पत्र वाहक को इब्राहीम पुत्र इश्तर के पास भेज कर बता दिया कि अपनी फ़ौज के साथ तुरन्त कूफ़ा वापस आएं अतः तीसरे दिन वह अपने लश्कर के साथ कूफ़ा आए अब दुश्मनाने आले रसूल की सरकोबी का समय आ गया था अतः पकड़-धकड़ आरम्भ हो गई पहले ही पाँच सौ आदमियों का जत्था पकड़ कर मुख़्तार के पास पेश हुआ तो मुख़्तार ने कहा कि इनमें से जो जो कत्ल इमाम

हुसैन^अ०^ के मौक़े पर करबला में मौजूद हो उन्हें मुझसे बताते जाना उनकी मैं जान बख़्शी नहीं करूँगा बाक़ी सबको छोड़ दूँगा अतः चुन-चुन जिनके बारे में जुर्म सिद्ध हुआ वह क़त्ल कर दिये गए बाक़ी सबको वफ़ादारी के इक़रार के बाद छोड़ दिया गया इसके बाद मुख़्तार की ओर से शहर में मुनादी करा दी गयी कि सब लोग अपने-अपने दरवाज़े बन्द करके बैठ जायें उसे अमान होगी सिवाए उस आदमी के जो आले रसूल के ख़ून में शरीक हुआ यह दिन बुध 24 ज़िलहिज्जह 66 हिजरी का है।

अबू उमराह कीसान पुलिस अफ़सर थे चूँकि अब क़ातिलाने हुसैन^अ०^ घरों में छुपकर बैठ गए थे इसलिए अबू उमरह की ड्यूटी लगी कि एक हज़ार मज़दूर साथ ले जाये और जो जो ज़ालिम करबला में शरीक हुए थे उनके घरों को गिरा दिया जाए क्योंकि अबू उमराह इन लोगों को ख़ूब जानते थे अतः उन्होंने बहुत से घरों को गिरवा दिया और बहुत से दुश्मनाने अहलेबैत क़त्ल किये गये।

अब बड़े-बड़े लोग जो क़ातिलाने इमाम हुसैन^अ०^ में से थे मार डाले गये जैसे शिम्र ज़िल जौशन, अब्दुल्लाह पुत्र असद, मालिक पुत्र नसरबद, हमल पुत्र मालिक महारबी, ज़्याद पुत्र मालिक, अमरान पुत्र ख़ालिद, अब्दुर्रहमान पुत्र अबी ख़शक़ारा, बजली अब्दुल्लाह पुत्र क़ैस ख़ूलानी, अब्दुल्लाह पुत्र सनख़ान, अब्दुर्रहमान पुत्र सलखव, अब्दुल्लाह पुत्र वहू, उसमान पुत्र ख़ालिद जहानवी, बशर पुत्र सौसा कावजी, ख़ूली पुत्र यज़ीद असहजी, उमर पुत्र साद, हकीम पुत्र तुफ़ैल ताई, ज़ैद पुत्र वक्त जहानवी, हुरमला पुत्र काहिल असदी, उमर पुत्र सवीह सैदाक़ी और क़ैस पुत्र असास।

कूफ़े की मुहिम के बाद मुख़्तार ने इब्राहीम को फिर इब्ने ज़ियाद से जंग के लिए भेज दिया मूसल से पाँच फ़रसख़ पर ख़ूँरेज़ जंग हुई कड़ा मुक़ाबला हुआ और शाम की फ़ौज की हार हुई और खुद पुत्र ज़्याद इब्राहीम के हाथ मारा गया इसके अलावा हसीन पुत्र नमीर सकूनी और शरजील पुत्र ज़िलकलाह जो शाम के दो प्रसिद्ध सरदार थे वह इस जंग में मारे गए इब्राहीम ने इब्ने ज़ियाद का सर काट कर मुख़्तार के पास भेजा और मुख़्तार ने मुहम्मद पुत्र हनफ़िया के पास भेज दिया इसके बाद इब्राहीम ने मूसल और आसपास सभी ओर क़ब्ज़ा करके उम्माल नियुक्त कर दिये और नसीबैन में जाकर रुके, मुख़्तार अब कूफ़े में अकेले रह गए।

इब्ने ज़ुबैर को मुख़्तार से बैर बन चुका था इराक़ में बसरा पर अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर का क़बज़ा था उसी दौरान उन्होंने बसरा के स्थानीय हाकिमों को जो अधिक उनके निकट थे और भरोसे के क़ाबिल थे उनको हटा करके अपने भाई मुसअब पुत्र ज़ुबैर को बसरा का हाकिम बनाया। हो सकता है कि उसी समय उसका मक़सद मुख़्तार से मुक़ाबले में मुहिम का सर अंजाम देना था।

इधर कूफ़े से जो क़ातिलाने हुसैन^अ०^ मुख़्तार के हाथों बच कर किसी प्रकार निकले जैसे शीश पुत्र रबई मुहम्मद पुत्र आरा अशशर है पुत्र मसकद सनान पुत्र इन्स और अब्दुल्लाह पुत्र उरवह ख़शमी आदि वह सीधे मुसअब पुत्र ज़ुबैर के पास बसरा पहुँचे और उन्होंने भी उसको मुख़तार से जंग करने के लिए उकसाया ख़ास तौर से शीश पुत्र रिबई और मुहम्मद पुत्र शीश ने बड़े जोड़-तोड़ के साथ अपनी मज़लूमी की ग़लत कहानियाँ सुनाकर रोने-धोने से काम लिया और कूफ़े पर आक्रमण करने की राय दी।

दैनूरी का कहना है कि दस हज़ार कूफ़े वाले धीरे-धीरे निकल कर बसरा पहुँच गये और इन सबने मुहम्मद पुत्र अशीश के नेतृत्व में मुसअब को कामयाबी का यक़ीन दिलाया इस बीच एक वाक़िआ ये हुआ कि अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर ने मक्का मोअज़्ज़मा में मुहम्मद पुत्र हनफ़िया के रिश्तेदारों और उन कूफ़े के आदमियों को जो मक्का में थे पकड़ लिया और एक समय मुक़र्रर कर दिया कि यदि उस समय तक उन्होंने बैअत न की तो सब ज़िन्दा जला दिये जायेंगे मुहम्मद हनफ़िया ने एक पत्र वाहक द्वारा इसकी ख़बर मुख़्तार को दी मुख़्तार ने कूफ़े से फौज रवाना कर दी जिसने मक्का जाकर मुहम्मद हनफ़िया और उनके साथ वालों को क़ैद से रिहाई दिलाई यह लोग तो पुत्र ज़ुबैर का ख़ात्मा कर देने के लिए तैयार थे मगर मुहम्मद हनफ़िया ने हरम में ख़ूँरेज़ी को सख़्ती के साथ मना किया। अतः यह लोग इब्ने हनफ़िया को

बक़िया..... पेज 34 पर

अलम और अलमदारी

सफ़वतुल उलमा मौलाना सै० कल्बे आबिद ताबा सराह

वतन, क़ौम, मज़हब और दीगर बलन्द मक़ासिद के लिए बा-अज़्म इन्सान हर दौर में कुर्बानियाँ देते रहते हैं। नौए इन्सानी के इब्तेदाई दौर में जनाब हाबील की कुर्बानी इतनी बाअज़मत थी कि कुरआन ने तज़किरा किया। जनाब इब्राहीम का अपने महबूब फ़रज़न्द के गले पर छुरी रख देना अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए अज़ीज़ तरीन चीज़ निसार करने के लिए बलन्द मिसाल थी कि इसकी यादगार मनाना क़यामत तक के लिए मुसलमानों का शेआर दे दिया गया। जनाब यहूया की कुर्बानी भी मामूली कुर्बानी न थी। हमारे हिन्दुस्तान में भी एक बेटे के बाप के अहद को निबाहने के लिए दश्त नवरदी पर आमादा होना और एक भाई और बीवी की वफ़ादारी की याद सैकड़ों साल से मनाई जाती है। कहने को वाक़िअ-ए-कर्बला भी एक कुर्बानी की यादगार है जो बक़ाए इस्लाम के लिए पेश की गई। लेकिन हक़ीक़त ये है कि इस कुर्बानी का तक़ाबुल किसी बड़ी से बड़े कुर्बानी से मुमकिन नहीं। ये मुख़तलिफ़ जेहात और हैसियतों से ऐसी अनोखी और निराली है कि कोई दूसरी कुर्बानी इसके हम पल्ला क़रार नहीं पा सकती।

शायर ने कहा है:

यक हुसैने नीस्त कू गरदद शहीद
वरना बिसयार अन्द दर दुनिया यज़ीद

यज़ीद से ज़ालिम दुनिया में और भी हो सकते हैं। मगर हुसैन के से जुल्म बर्दाश्त करने वाले, और मक़सद पर डटे रहने वाले न थे न हैं और न आइन्दा हो सकते हैं। लेकिन मुझे "यक हुसैने नीस्त" के जुमले से इत्तेफ़ाक़ नहीं। क्योंकि इसका मतलब ये है कि बस एक हुसैन[अ०] का सा कोई दूसरा मौजूद नहीं। लेकिन मैं कहता हूँ कि दुनिया ने अली अकबर का सा बेटा, अब्बास का सा भाई, क़ासिम का सा भतीजा, औनो मुहम्मद के से भाँजे, ज़ैनब व उम्मे कुल्सूम की सी बहनें और असहाबे बावफ़ा के से सहाबी कब देखे। जब इमाम हुसैन ने इरशाद फ़रमाया कि इनके से सहाबी न रसूल के थे न अली के थे और न हसन के थे। हालांकि इस फेहरिस्त में सलमान, मिक़दाद, अबूज़र, अम्मारे यासिर, मालिके अश्तर, उमर बिन हुमुक़ ख़ज़ाओी, रशीद हजरी के नाम मिलते हैं। तो फिर कहीं और कहाँ मिल सकते हैं। जनाब ईसा की पूरी ज़िन्दगी का निचोड़ वह बारह हवारी थे जिन्होंने नबी की आवाज़ *"कौन है जो अल्लाह की तरफ़ बढ़ने में मेरी नुस्रत करे"* पर बड़े ज़ोर व दावे से ये एलान किया थाः *"हम हैं ख़ुदा के मददगार (उसके मक़सद में मुईन) हम अल्लाह पर ईमान लाए हैं और ऐ ईसा गवाह रहिये कि हम मुसलमान हैं"* उन में से ग्यारह साबित क़दम रहे लेकिन एक डगमगा गया और न सिर्फ़ ये कि जनाब ईसा को छोड़ दिया बल्कि दुश्मन का मुख़बिर बन गया। रिसालतमाब[अ०] के साथियों ने जंगे ओहद, ख़ैबर और हुनैन वग़ैरा में क्या किया? किसको नहीं मालूम। हज़रत अली[अ०] के साथियों ने नेज़ों पर कुरआन देखकर कुरआने नातिक़ से क्योंकर निगाहें फेरीं ये तारीख़ का एक दर्दनाक वाक़िआ है इमाम हसन[अ०] को अपने साथियों पर एतेमाद होता तो मुआविया से सुलह क्यों फ़रमाते? इस में कोई शक नहीं कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ख़ुद बड़ी बहादरी से लड़े मगर ग़ैरों का क्या ज़िक्र बेटे और भाई तक रंग बदलते देखकर दुश्मन से मिल गए। मगर क्या कहना हुसैन[अ०] के अज़ीज़ों, दोस्तों और अन्सार का जिन्होंने महज़रे शहादत पर वफ़ा की मोहरें सब्त कर दीं। वाक़िअ-ए-कर्बला के मुनफ़रिद होने की एक हैसियत

ये भी है कि ये वफ़ाओं का कोई अकेला फूल नहीं गुलदस्ता है। बल्कि गुलदस्ता क्यों कहूँ, एक शादाब गुलिस्ताँ और सदाबहार चमन है इस फ़र्क़ के साथ गुलज़ारे हुसैनी के फूल जितने मुरझा गए उतनी ही उनकी शमीम फैलती गई। और जितना ख़िज़ाओं ने मिटाना चाहा उतनी ही बहार पर निखार आता गया। ये फ़रज़न्दे आदम जनाब हाबील की कुर्बानी की तरफ एक फ़र्द के सिबातो इस्तेक़लाल का वाक़िआ नहीं। ये जनाब इब्राहीम व इस्माईल के क़िस्से की तरह सिर्फ़ एक बाप और बेटे के ख़ुदा की मर्ज़ी के सामने सर झुका देने का तज़किरा नहीं। ये जनाब यह्या के मिस्ल ज़ालिम व जाबिर बादशाह के सामने सर न झुकाने की मिसाल भी नहीं। ये ईसा के हवारिय्यीन की तरह सिर्फ़ चन्द दोस्तों की साबित क़दमी का ज़िक्र भी नहीं। ये हिन्दुस्तान के मशहूर वाक़िए की तरह सिर्फ़ एक भाई और ज़ौजा की वफ़ादारी की दास्तान भी नहीं। कर्बला में गुज़िश्ता तमाम कुर्बानियों का जलवा जिनकी यादगार सैंकड़ों बरस से मनाई जाती है बेहतर अन्दाज़ से मिलने के अलावा ऐसी मिसालें भी मिलती हैं जो न पहले नज़र आ सकीं और ना आइन्दा नज़र आएंगी। वाक़िअ-ए-कर्बला और गुज़िश्ता वाक़िआत की मिसाल वैसी ही है जैसे कुरआन मजीद और गुज़िश्ता अम्बिया के सहीफ़े, कुरआन में वह सब सिमट आया जो गुज़श्ता सहीफ़ों में है और इन सहीफ़ों में बहुत से वह हक़ाएक़ नहीं जो कुरआन में पाए जाते हैं। इस कुर्बानी में शिरकत करने वाले एक नहीं कई भाई हैं, बेटे हैं, भाँजे हैं, भतीजे हैं, दूर और क़रीब के अज़ीज़ हैं, आज़ाद हैं, ग़ुलाम हैं, मर्द हैं, औरतें हैं। औरतों में भी बहने हैं, भतीजियाँ हैं, बेटियाँ हैं, बीवियाँ हैं। जाँनिसारों के अहलोअयाल हैं। इनमें कुछ बूढ़े हैं, कुछ कमसिन हैं, कुछ जवान हैं। इतने इख़्तेलाफ़ात के बावजूद जिसको भी कुर्बानी के आइने में देखा सब एक शान के नज़र आए। क्या ख़ूब कहा है आले रज़ा मरहूम नेः-

अपने-अपने सिन्फ़ो सिन के कैसे नुमाइन्दे निकले
करबो बला के तपते बन में छाँट के जिनको लाए हुसैन[अ०]

देखने की बात है कि जिस चमन के हर फूल से बुए वफ़ा आती हो, जिस फ़लके शहादत के हर सितारे में ईसार की चमक हो, जिनमें का हर एक शुजाअत व बिसातत का आफ़ताबो माहताब हो। जिस लशकर का हर सिपाही फ़रमाँबरदारी व इताअत शेआरी का पैकर हो फिर उस वफ़ाशेआर का क्या आलम होगा जो इस गुलिस्ताँ का गुले सर सबद जो इन सितारों में चाँद, जो माहताबों में आफ़ताब और जो उस लश्कर का अलमदार हो जिसको दो मासूमों की निगाहे इस्मत ने चुना जिसको अली[अ०] के से बाप ने अपनी नयाबत और हुसैन[अ०] के से भाई ने अपने रायत के लिए मुन्तख़ब किया हो। मानी हुई बात है कि लश्कर में अलम को मरकज़ी हैसियत हासिल होती है। मरकज़ के टूट जाने से अजज़ा मुन्तशिर हो जाते हैं। इसी लिए अलमदारी का इन्तेख़ाब बहुत सोच समझ कर किया जाता है। जंगे ओहद में जब मुसलमानों के क़दम उखड़ गए थे लश्करे इस्लाम को फ़रार करते देखकर कुफ़्फ़ार के हौसले बलन्द हो गए थे उस महल पर अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब[अ०] ने मौक़े की नज़ाकत देखकर ये तरीक़-ए-जंग इख़्तियार किया कि जिसने भी कुफ़्फ़ार का अलम उठाया, अलमदारे लश्करे इस्लाम ने उसको बढ़कर क़त्ल कर दिया। बारहा अपना झण्ठा नीचे होते देखकर कुफ़्फ़ार के दिल छूट गए हिम्मत टूट गई। काफ़िरों को भी इसका एहसास हो गया। लेकिन ये भी समझ गए कि आज अली[अ०] किसी भी अलमदार को ज़िन्दा न छोड़ेंगे तो उन्होंने अलम की मरकज़ियत को क़ायम रखने के लिए झण्डा एक औरत के हाथ में दे दिया। क्योंकि जानते थे कि अली[अ०] की मर्दानगी ये गवारा न करेगी कि औरत पर हाथ उठाएं। रिसालतमआब[स०] ने इस ओहदे को इतना अहम क़रार दिया कि जिस मारके में अली[अ०] मौजूद रहे उसी कर्रार ग़ैरे फ़रार को अलमदार बनाया जंगे मौता में आपकी निगाहे इन्तेख़ाब ने जनाब अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा, जनाब ज़ैद और जनाब जाफ़रे तैयार को अलमदारी के लिए चुना। इनमें से हर एक ने हक़ अदा कर दिया। जंगे जमल में बजाए अलम के मरकज़ियत उस जमल को हासिल हो गई थी जिस पर उम्मुलमोमिनीन सवार थीं। गोया पूरे लश्कर का अलम

यही ऊँट बना हुआ था बसरे वाले जानें देकर उसकी हिफ़ाज़त कर रहे थे। जमल के क़रीब कटे हाथों के ढेर लग गए थे। अमीरुलमोमिनीन ने फैसला फ़रमाया कि बेशक ये जमल अपनी जगह क़ायम रहेगा ख़ूँरेज़ी होती रहेगी। लेहाज़ा हुक्म दिया कि उसको पै कर दिया जाए चुनानचे ये मरकज़े फ़साद चीख़ मार कर गिरा। बसरे वालों के दिल टूट गए और पैर उखड़ गए। ज़ाहिर है कि कर्बला की जंग हक़ व बातिल का एक ऐसा बेमिस्ल मारका था जिसमें इस्लामी उसूल और अख़लाक़ और किरदार के वो नमूने पेश होना थे जो क़यामत तक के लिए मिशअले राह बन जाएं। इसका अलमदार ऐसा होना चाहिए था जो सदाक़त व दयानत, वफ़ादारी व इताअत, शुजाअत व बसातत, ईमान व इस्तेहकाम, अल्लाह पर यक़ीन व एतेमाद ग़रज़ इस्लामी किरदार का बेमिसाल नमूना और हुसैन[अ०] के मक़सदे शहादत का आइना हो और ये शख़सियत थी जनाब अब्बास बिन अली बिन अबी तालिब की। जिनकी तारीफ़ में इमाम जाफ़र सादिक़ की मासूम ज़बान यूँ रत्बुललिसान है..... ख़ुदा! रहमत नाज़िल कर हमारे चचा अब्बास पर जो तेरे दीनदार और मुस्तहकम ईमान वाले थे उन्होंने इमाम हुसैन[अ०] के साथ जंग की और कारहाए नुमायाँ अन्जाम दिये। आख़िर दरज-ए-शहादत पर फ़ायज़ हुए ख़ुदा ने उनके कटे हुए बाज़ुओं के एवज़ दो पर अता फ़रमाए। ये किसी शायर का क़सीदा नहीं मासूम की ज़बान के अलफ़ाज़ हैं जिससे अदा होने वाला हर लफ़्ज़ मुबालग़ा से दूर और हक़ीक़त का आइना होता है। भाईयों की वफ़ादारी की मिसालें तो बहुत मिलती हैं यह वह रिश्ता है जिसको ईमानी मुहब्बत के इज़हार के लिए क़ुरआन मजीद ने मुन्तख़ब फ़रमाकर इरशाद कियाः

"मोमिन एक दूसरे के भाई हैं।" दूसरी आयत में इरशाद हैः "अपने ऊपर अल्लाह के ये नेमत याद करो, जबकि तुम में दुश्मनी थी अल्लाह ने दिलों में उलफ़त पैदा की और अल्लाह की नेमत के तुफ़ैल में तुम भाई-भाई बन गए।" रिसालतमआब[स०] ने भी जब मुसलमानों के इत्तेहाद को मज़बूत करना चाहा तो रिश्त-ए-उख़ुव्वत क़ायम फ़रमाया। और अपनी और अली[अ०] की मुहब्बत दुनिया पर यूँ ज़ाहिर फ़रमाई कि हर मरतबा अली[अ०] को अपना भाई मुन्तख़ब किया। लेकिन जहाँ तारीख़ के औराक़ में भाईयों की फ़िदाकारियाँ मिलीं वहीं सौतेले भाईयों में अदावतें और दुश्मनियाँ भी नज़र आईं। मालूम नहीं कितने ऐसे भाईयों के हाथ ख़ून में रंगे नज़र आए और कितने ऐसे थे जिन्होंने सूलियाँ दिलवा दीं और आँखें निकलवा लीं। शक़ावत की ऐसी मिसाल भी मिली कि भाई का कटा हुआ सर कमज़ोर बाप के पास तोहफ़े में भेजा गया। क़ुरआने मजीद ने जनाब यूसुफ़ का ज़िक्र किया है, उस अल्लाह के प्यारे बन्दे को ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर करना पड़ी। मुद्दतों क़ैद में रहना पड़ा, फ़िराक़े पिदर बर्दाश्त करना पड़ा, बाप को इतना सद्मा पहुँचा कि आँखों की रौशनी चली गई। किसके हाथों सौतेले भाई ही तो थे जिन्हें यूसुफ़ के से हसीन व जमील ख़ुश अख़लाक़ व बलन्द किरदार को कुँए में डालते रहम न आया।

उन्होंने तो मामूली रक़म पर ग़ुलाम बनाकर बेच डाला। सौतेली माओं के दिल का बुग़्ज़ो अदावत परवरिश के असर से औलाद में मुन्तक़िल हो जाया करता है। रसूल[स०] की आँख बन्द होने के बाद पैदा होने वाले फ़ित्नों की जड़ बहुत कुछ यही सौतापा था। मगर एक तरफ़ ये हज़ारों सौतेली माँओं और भाईयों के अदावत की मिसालें हैं तो दूसरी तरफ़ जनाब उम्मुल बनीन और उनके साहबज़ादों जनाब अब्बास और उनके भाईयों की मुहब्बत जाँनिसारी और फ़दाकारी की तसवीरें आइन-ए-कर्बला में नज़र आती हैं। मुझे नहीं मालूम कि ख़ास तौर पर हज़रत इमाम हुसैन से अलग हो जाने की किसी को इस तरह दावत दी गई हो। जैसी जनाब अब्बास[अ०] को रिश्तेदारी का हवाला देकर शिम्र ज़िल जौशन ने दी थी। न सिर्फ़ ये कि अमान मिल रही थी बल्कि शिम्र के असरात से बड़े से बड़ा ओहदा मिलने की भी उम्मीद थी। मगर जनाब अब्बास और उनके भाईयों ने इस दावत को ठुकराया और वफ़ादारियों का मुज़ाहेरा करके सौतेले भाईयों की लाज रख ली। जिस वक़्त हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने शबे आशूर अपना बेनज़ीर ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया और शाह कम सिपाह ने अपने मुख़्तसर से लश्कर

को भी ख़ुशी से साथ छोड़ने की इजाज़त दे दी।

और जब ये देखा कि साथियों में कोई जाने के लिए नहीं उठा तो हिम्मत बढ़ाने के लिए भी कह दिया कि तुम लोग अपने साथ मेरे एक-एक अज़ीज़ को भी लेते जाओ। जब इस मंज़िल पर इमाम हुसैन[अ॰] का ख़ुतबा पहुँचा तो जनाब अब्बास ही थे जो सबसे पहले उठे थे और फ़रमाया था कि आक़ा ये हरगिज़-हरागिज़ नहीं हो सकता कि हम आपका साथ छोड़ दें आप शहीद कर दिये जाएं और हम ज़िन्दा रहें। जनाब अब्बास के इस हौसलामन्दाना जवाब के बाद दूसरे वफ़ादारों ने अपनी जाँनिसारी का इज़हार किया। ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता कि जनाब अब्बास से पहले मआज़ल्लाह दूसरे साथी मुज़बज़ब थे। और हज़रत अब्बास की तक़रीर से उनमें जोश व हिम्मत पैदा हुई। नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि जनाब अब्बास की वफ़ादारी व जाँनिसारी की हैबत उनके दिलों पर ऐसी थी कि किसी को हिम्मत न हुई कि उनसे पहले उठने की जुरअत करता। सब मुन्तज़िर थे कि पहले जनाब अब्बास जवाब दे लें तब हम अपने दिल की बात कहें। यही वह जनाब अब्बास की वफ़ादारियाँ थीं कि उनकी शहादत पर इमाम को इरशाद फ़रमाना पड़ाः

''अब मेरी कमर टूट गई और राहे चार ओ तदबीर बाक़ी न रही'' और इसी की बिना पर इमाम हुसैन[अ॰] की तरफ़ मन्सूब शेर में जनाब अब्बास को कर्बला के शहीदों में अफ़ज़लुश्शोहदा का लक़ब दिया गया। और यही अज़मते किरदारे जनाब अब्बास है जिसकी बिना पर अबूहमज़ा सुमाली की इमाम जाफ़र सादिक़ से रिवायत करदा ज़ियारत में मदहो सना के फूल निछावर किये गए हैं।

ज़ियारत में जनाब अब्बास[अ॰] की अज़मते किरदार, बलन्दि-ए-ईमान और आपके ख़ुलूसे अमल पर रौशनी पड़ती है। ज़बाने मासूम से हज़रत अब्बास की मद्होसना में अदा होने वाला उनका हर जुमला ताजदारे वफ़ा के ख़ुलूस की कलग़ी के लिए ऐसा गौहरे आबदार है जिसका जवाब मुमकिन नहीं। हर हर जुमला ऐसा है कि उसकी तशरीह के लिए पूरा मज़मून चाहिए। □□□

बक़िया... शहादत है, मतलूब व मक़सूदे मोमिन

फिर लाशे अली असग़र लाकर ख़ेमे में मादरे अली असग़र हज़रत रुबाब से फ़रमाया तुम अपने बच्चे को ले लो! अब ये तुम से पानी कभी तलब नहीं करेगा। और फिर वह वक़्त भी आ गया जब इमाम आली मक़ाम का सरे अक़दस नेज़े पर बलन्द था और यज़ीदी फ़ौज फ़तह के बाजे बजा रही थी। आज आशूरे मुहर्रम है 61[हि॰] में यही तो दिन था जब हुसैन[अ॰] और अस्हाबे हुसैन के मुक़द्दस लाशे सहराए कर्बला में बेगोरो कफ़न पड़े थे। ख़यामे आले रसूल में आग लगी हुई थी। यज़ीद अपनी फ़तह पर नाज़ाँ था मगर आने वाली तारीख़ उसे झुठला रही थी कि तू हरगिज़ फ़ातेह नहीं है! फ़ातेह तो वह हुसैन[अ॰] हैं जिन्होंने शहीद होकर हक़ व सदाक़त और इस्लाम की लाज रख ली और सच्चाई का अलम क़यामत तक के लिए बलन्द कर दिया, यज़ीदी आमिरियत के जनाज़े को रुसवाई के गहरे ग़ार में दफ़न कर दिया और औलादे आदम के ज़मीर को वह रौशनी दे दी जिसे लाखों यज़ीद मिलकर भी अब कभी नहीं बुझा सकते और अपने ख़ून से इन्सानियत के शऊर की तख़्ती पर तहरीर कर गए कि सच्चे मोमिन का मतलूब व मक़सूद माद्दी सलतनत व इक़्तेदार नहीं होता बल्कि हमेशा उसका मतलूब व मक़सूद राहे ख़ुदा में क़ुर्बानी और शहादत की ला ज़वाल इज़्ज़त का हासिल करना होता है।

□□□

शहादत है, मतलूब व मक़सूदे मोमिन

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
हिन्दी रूपः डॉ आरिफ़ अब्बास

तारीख़ के हर दौर में जब बदी की कुव्वतें उभरीं और तागूती लश्कर सफ़ आरा हुए तो उनसे टक्कर लेने के लिए कुछ ईमानी ताक़तें भी सामने आती रहीं और अपने यक़ीने मोहकम और जज़्ब-ए-हक़ परस्ती से उनका मुक़ाबला करती रहीं और उन्हें शिकस्त देती रहीं और इस तरह उन्होंने नामूसे हक़ की हिफ़ाज़त का हक़ अदा किया और इस राह में कभी उन्होंने अपनी जान माल, इज़्ज़त, आबरू, औलाद, मन्सब और दौलत किसी चीज़ की भी परवा न की और इस ईमानी फ़र्ज़ को अन्जाम दिया जो अल्लाह की तरफ़ से उन पर आएद होता था बिलाशुब्ह इस्लाम दीने इलाही है और यही इन्सानी फ़लाह का वाहिद ज़रिया और वसीला है। इसलिए इसका ज़वाल इन्सानियत की बर्बादी और इस निज़ामे हिदायत की तबाही के मुतारादिफ़ है जो अल्लाह ने इन्सानी फ़लाह के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है इसीलिए ये ज़रूरी था कि अल्लाह की तरफ़ से उसके दीन और उसके निज़ामे हिदायत के तहफ़्फ़ुज़ के लिए हमेशा ऐसी शख़्सियतें उभरती रहीं जो एक लमहे के लिए भी बातिल के सामने सरे इताअत न झुका सकीं और बनी नौए बशर की बक़ा और खुशहाली और दुनियवी व उख़रवी फ़लाह व नजात के इस वाहिद वसीले को मिटने से बचा लें। इन्सानी तारीख़ हक़ व बातिल की टक्करों के बेशुमार वाक़िआत अपने दामन में लिये हुए है इन वाक़िआत में बहुत मरतबा ऐसा भी हुआ है जब हक़ की ताक़तों ने बातिल की सफ़ों को माद्दी शिकस्त भी दी, और कभी ऐसा भी हुआ कि हक़ परस्त ताक़तों को माद्दी शिकस्त और माद्दी मग़लूबियत का सामना करना पड़ा। लेकिन यहाँ इस हक़ीक़त को हमेशा हमें अपने सामने रखना चाहिए कि हक़ व बातिल की जंगें जब भी हुईं वह उसूल की जंगें थीं और नज़रियात की लड़ाईयाँ थीं। उसूल और नज़रियात की लड़ाईयों में माद्दी ग़लबा और जुग़राफ़ियाई फ़ुतूहात की कोई क़ीमत ही नहीं हुआ करती हक़ीक़त में इस क़िस्म की जंगों में फ़तह और कामयाबी का असली मेयार उस मक़सद का हुसूल और उस मक़सद की कामयाबी होती है जिसके लिए कोई फ़रीक़ ऐसी जंग लड़ता है। दीनी और तौहीद परस्त ताक़तों की जंग का हमेशा ये मक़सद रहा है कि दुनिया वाले हक़ को पूरी तरह पहचान लें और बातिल के चेहरे पर हक़ की नक़ाब और हक़ के चेहरे पर बातिल का पर्दा न डाला जा सके और इस नुक़्त-ए-नज़र से तो अहलेहक़ हमेशा कामयाब रहे और जब भी हक़ व बातिल का टकराव हुआ उन्हें अपने मक़सद में कामयाबी हुई और कभी बातिल की कुव्वतें हक़ परस्तों से उनकी इस फ़तह को छीनने में कामयाब न हो सकीं। माद्दी फ़ुतूहात के पुजारियों ने इस ख़याले ख़ाम में कि किसी को क़त्ल कर देना और क़ैदी बना लेना ही उनकी जीत की अलामत और दूसरे की शिकस्त की निशानी है, अहले हक़ पर तरह तरह के ज़ुल्म ढाए और उनके खूने नाहक़ से ज़मीन को रंग दिया। मगर ज़ालिम कुव्वतों को कभी इसका अन्दाज़ा न हुआ कि उनका ज़ुल्म जिस क़दर बढ़ता गया, उनकी शिकस्त यक़ीनी और दाएमी होती गई और अहले हक़ का जिस क़दर खून बहता गया और उनकी मताए हयात लुटती रही

उसी क़दर उनके मक़सद में इस्तेहकाम पैदा होता गया। ज़ालिम शैतानी ताक़तें मज़लूम ईमानदारों के ख़ून से खेलती रहीं और अपने फ़ातेह होने का ख़्वाबे परीशाँ देखती रहीं मगर आने वाली तारीख़ उन पर मुसकुराती रही और उन्हें झुठलाती रही कि तुम हरगिज़ असली फ़ातेह नहीं हो बल्कि असली और हक़ीक़ी फ़ातेह वह शहीदाने राहे ख़ुदा हैं जिन्होंने अपनी पाक ज़िन्दगी का एक-एक लम्हा हिफ़ाज़ते हक़ में सर्फ़ कर दिया और अपने मुक़द्दस लहू की आख़िरी बूँद भी नामूसे इस्लाम की हिफ़ाज़त में कभी अज़ीज़ न रखी। हक़ व बातिल की आवेज़िश की तवील तारीख़ के एक यादगार मोड़ पर यही शैतानी ताक़तें यज़ीद के रूप में उभरी थीं और पूरी शिद्दत के साथ हक़ के मुक़ाबले में खड़ी हुईं थीं और दूसरी तरफ़ हक़ परस्ती नवास-ए-रसूल[स०] हज़रत सैय्यदुश्शोहदा हुसैन[अ०] बिन अली[अ०] के लिबास में थी। ये 61[हि०] का ज़माना था जब आशूरे मुहर्रम को हक़ व बातिल की जंग हुई। ये बात मुमकिन ही न थी कि इमाम हुसैन दुनिया में मौजूद होते और दीने ख़ुदा को तबाह होते हुए देखते रहते और उसके तहफ़्फ़ुज़ के लिए कोई इक़दाम न करते। अपनी ज़िन्दगी और राहत व आराम को इस्लामी मफ़ाद पर मुक़द्दम कर देते और यज़ीदी आमिरियत व मुलूकियत के जारेहाना हमलों से इन्सानी और इस्लामी अक़दार का बचाव न करते और इस्लाम की फ़रियाद पर तवज्जो न करते। इमाम हुसैन[अ०] ने इसलाम और हक़ व दयानत की फ़रियाद पर लब्बैक कही, अपने फ़र्ज़ का भरपूर एहसास फ़रमाया और जो कुछ भी उनके क़ब्ज़े में था। उसे अपने साथ लेकर कर्बला के रेगिस्तान की तरफ़ रवाना हो गए। ये बड़ा ही इम्तिहानी और आज़माईशी वक़्त था जब सरवरे कायनात[स०] की पूरी इस्लाही कोशिशें और पूरी तबलीग़ी मेहनत बर्बादी के दहाने पर आ चुकी थी। इस्लाम के बदतरीन दुश्मन अपने नजिस चेहरों पर हक़ की नक़ाब डाल कर उसकी जड़ें काट रहे थे। लातो उज़्ज़ा के पुराने पुजारी तौहीद की बुनियादें हिला रहे थे, तकबीर की सदाएं चंग वरबाब के नग़मों से दबाई जा रही थी। ज़िक्रे ख़ुदा की महफ़िलों और वाज़ो नसीहत के तज़किरों के बजाए आमिरियत व मुलूकियत के क़सीदे पढ़े जा रहे थे, आलो अस्हाबे रसूल[स०] का ख़ून तक मुबाह कर दिया गया था। यज़ीद अपनी मुलूकियत और आमिरियत के नशे में चूर होकर ये नारा लगा रहा था कि-

"बनी हाशिम (ख़ुदा की पनाह) मुल्क व दौलत का एक खेल खेले थे न तो कोई वही उतरी थी और न ख़ुदा का कोई कलाम आया था। हज़रत सैय्यदुश्शोहदा[अ०] ने ऐसे हौलनाक वक़्त में और ऐसी आज़माइशी घड़ी में वही किया जो उनकी बहैसियते नवास-ए-रसूल ज़िम्मेदारी थी। कूफ़ा वालों ने हज़ारों ख़ुतूत भेजे कि हमारी हिदायत के लिए तशरीफ़ लाइये इमाम आली मक़ाम ने उनकी दावत को क़ुबूल किया और कूफ़ा के क़रीब सरज़मीने कर्बला पर आ गए। आपने बारहा फ़रमाया था कि मैं ऐशो तरब और मुलूकियत व सलतनत की ख़्वाहिश लेकर ये सफ़र नहीं कर रहा हूँ बल्कि मेरी ग़रज़ सिर्फ इतनी है कि अपने नाना की उम्मत की हिदायत करूँ। मुहर्रम 61[हि०] के नौ दिन भी गुज़र गए फिर वह रात आई जिसकी सुबह, सुब्हे क़यामत से किसी तरह कम न थी ज़माने के क़दम कुछ और आगे बढ़े। सुब्हे आशूर के ख़ूनीं सूरज ने उफ़क़े मश्रिक़ से अपना सर बलन्द किया। मर्दाने हक़ ने मैदाने शहादत में जाने की तैयारियाँ शुरु कर दीं फिर बूढ़े सूरज ने शहीदों का लहू कर्बला की जलती हुई रेत पर गिरते हुए देखा, औरतें बेवगी की आज़माईश में मुब्तला होने लगीं, माओं की गोदें ख़ाली होने लगीं। बच्चे यतीम होने लगे और तीन दिन के भूके प्यासे परस्ताराने हक़ जामे शहादत नोश करने लगे। आख़िर आसमान की नीलगूँ आँखों ने वह वक़्त भी देख लिया जब हुसैन[अ०] का छः महीने का बेटा अली असग़र दुश्मन के तीन भाल के ज़हरीले तीर का खुद हुसैन की गोद में निशाना बन गया और नाज़ुक गले पर तीर खाकर बच्चे ने बाप को देखा और फिर मुस्कुरा कर बाप के गले में अपने छोटे-छोटे हाथ डाल दिये और दुनिया से रुख़सत हो गया। हुसैन[अ०] ने बच्चे के ख़ून को चुल्लू में लेकर अपने चेहरे पर मला और

बक़िया.... पेज 29 पर

मारक-ए-कर्बला की शख़्सियतों का इन्तेख़ाब

ख़तीबे इन्क़ेलाब मौलाना सै० हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
हिन्दी रूपः डॉ० आरिफ़ अब्बास

कर्बला का वाक़िआ मुहर्रम 61हि० में रुनुमा हुआ। आज सदियाँ गुज़रने के बावजूद भी सानेह-ए-कर्बला के बेशुमार पहलू सामने आ चुके हैं और तहक़ीक़ का हर बाब चन्द नये अबवाब के खुलने का सबब बन रहा है। ये भी हक़ीक़त है कि एतेराज़ करने वालों और शक करने वालों के एतेराज़ात और शुकूको शुब्हात का न ख़त्म होने वाला सिलसिला भी अब तक जारी है। मगर ये भी एक तारीख़ी सच्चाई है कि तारीख़े बशरियत में कोई वाक़िआ ऐसा नहीं जिस पर वाक़िअ-ए-कर्बला से ज़्यादा तालीफ़ो तसनीफ़ का काम हुआ हो। और कोई शख़सियत ऐसी नहीं जिस पर जनाब सैय्यदुश्शोहदा और उनके अन्सार से ज़्यादा लिखा गया हो। चाहे नस्र का मैदान हो या नज़्म का किसी एक शख़सियत और एक वाक़िए पर इतना तारीख़ी और अदबी मवाद मौजूद नहीं जितना वाक़िअ-ए-कर्बला और इमाम हुसैन पर मौजूद है।

हर दौर में इतिहासकार और मुहक़्क़ीन सानेह-ए-कर्बला के नये-नये पहलू सामने लाए हैं और लाते रहेंगे। और इसी तरह एतेराज़ करने वालों के एतेराज़ात का सिलसिला भी बन्द होने वाला नहीं।

एक एतेराज़ जो बराबर किया जाता है वह ये है कि अगर जनाब सैय्यदुश्शोहदाअ० के इल्म में ये बात थी कि वह कर्बला में शहीद कर दिये जाएंगे तो फिर वह अपने साथ ख़ानदान वालों ख़ास तौर पर ख़्वातीन और बच्चों को क्यों लेकर आए थे? हम मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अपने मुख़्तलिफ़ मक़ालात में इस सवाल का जवाब तफ़सील से देते हैं। यहाँ तफ़सील में जाने का वक़्त नहीं। मगर मुख़्तसर अर्ज़ किए देते हैं कि जनाब सैय्यदुश्शोहदाअ० ने पूरी हिक्मते अमली के साथ कर्बला के लिए शख़सियात का इन्तेख़ाब किया था। अगर आपने जनाब मुहम्मद हनफ़िया को और जनाब अब्दुल्लाह इब्ने जाफ़रे तैयार को मदीने में रह जाने का हुक्म दिया था तो उसमें भी मुस्तक़िल लाएह-ए-अमल पोशीदा था और अगर दूध पीते बच्चे अली असग़रअ० और जनाब सकीना जैसे कमसिन बच्चों को साथ लाए थे तो उसमें भी हिक्मते इमामत कारफ़रमा नज़र आती है क्योंकि अगर ये बच्चे और औरतें साथ न होतीं, ये वाक़िआ सिर्फ़ एक जंग के तौर पर सामने आता। लेकिन बच्चों और ख़्वातीन पर होने वाले मज़ालिम ने यज़ीदियत की फ़िक्र को पूरी तरह आशकार कर दिया और आज तक दरबारी इतिहासकार और वाक़िआ निगार भी इस बाब में यज़ीद और उसके कारिन्दों की सफ़ाई पेश करने से क़ासिर हैं।

इस ज़िम्न में हम एक और मुख़्तसर दलील पेश कर सकते हैं कि उन एतेराज़ करने वालों को इस तरफ़ भी सोचना चाहिए कि आख़िर क्या वजह है कि इमाम हुसैनअ० जब से मक्का से इराक़ की तरफ़ चले थे मुसलसल अपने साथ आने वालों को पेश आने वाले हालात से आगाह कर रहे थे और उन्हें वापस जाने का मश्वरा दे रहे थे। लेकिन कर्बला पहुँचने से पहले ज़ुहैर बिन क़ैन को अपनी नुसरत की दावत दी, कर्बला पहुँच कर जनाब हबीब इब्ने मज़ाहिर को ख़त लिख कर बुलाया और शबे आशूर हुर के लिए अपना दरवाज़ा खुला रखा।

बहरहाल जैसा कि मैंने शुरु में अर्ज़ किया कि इन मसाएल पर मैं मुख़तलिफ़ मक़ालात में तफ़सीलन

ज़िक्र कर चुका हूँ। अब हम आते हैं एक और पहलू से कर्बला में मौजूद एक और शख़्सियत पर गुफ़्तुगू करने की सआदत हासिल करते हैं। और उस आफ़ाक़ी हस्ती का ज़िक्र करने से पहले इन्तेहाई इज्ज़ो इन्केसारी के साथ अपनी बेबिज़ाअती का इज़्हार करते हैं। क्योंकि ये शख़्सियत वाक़िअ-ए-कर्बला में जनाब सैय्यदुश्शोहदा[अ॰] के बाद एक मरकज़ी किरदार की हामिल है। यानी अलमदारे हुसैन, फ़ातेहे फ़ुरात और सक़्क़ाए हरम जनाब अब्बास[अ॰] इब्ने अली[अ॰]।

जब भी जहाँ भी जनाब अब्बास[अ॰] का ज़िक्र आता है तो सबसे पहले जो तसव्वुर आता है वह एक इन्तिहाई जज़्बाती जल्द ग़ुस्से में आ जाने वाले और शुजाअत तो बहरहाल ज़िक्र ही क्या। ख़ास तौर पर मजालिस और महाफ़िल में मवद्दत के तक़ाज़ों के पेशे नज़र बाज़ औक़ात ऐसा बयान भी सामने आ जाता है जिस से नादान दोस्ती का इज़्हार भी होने लगता है। मौक़ा मिला तो इसकी मिसाल आने वाली लाइनों में पेश कर देंगे।

जैसा कि जनाब अब्बास[अ॰] की हयाते तैय्यबा के बारे में एक वाक़िआ बराबर नक़्ल किया जाता है और इस वाक़िए की सच्चाई पर आज तक किसी ने ज़बाने एतेराज़ नहीं खोली। वह आपकी विलादते बा सआदत का ज़िक्र है जिसमें मौलाए मुत्तक़ियान अली[अ॰] इब्ने अबी तालिब[अ॰] के जनाब फ़ातिमा कल्लाबिया यानी उम्मुल बनीन से अक़्द की तफ़सील है। तो ये बात तो तै है कि जनाब अब्बास[अ॰] अपने दूसरे भाईयों में एक मुमताज़ मक़ाम के हामिल हैं और दूध पीने के ज़माने ही से आपकी वादिल-ए-माजिदा जनाब उम्मुल बनीन ने आपकी तरबियत पर ख़ास तवज्जो दी और मुसलसल आपको वाक़िअ-ए-कर्बला के लिए तैयार करती रहीं। और ये बात पूरी तरह कमसिन अब्बास[अ॰] के दिलो दिमाग़ में बिठा दी कि वह औलादे फ़ातिमा[स॰] के अदना से ख़िदमतगुज़ार हैं।

दूसरी तरफ़ अली[अ॰] जैसा बाबा अब्बास[अ॰] की तालीमो तरबियत के फ़राएज़ अन्जाम दे रहा है। इस बात की वज़ाहत की ज़रूरत नहीं कि मौलाए काएनात[अ॰] ने अपने बेटे अब्बास[अ॰] को सिर्फ़ फ़ुनूने हर्ब ही नहीं सिखाए थे बल्कि बाबे मदीनतुल इल्म से बराहे रास्त कस्बे फ़ैज़ करने वाले अब्बास[अ॰] की इल्मी शख़्सियत भी इस बात की आइनादार थी कि आप आग़ोशे अली[अ॰] से फ़ैज़याफ़्ता हैं। अब ज़ाहिर है कि आग़ोशे हैदर के पले अब्बास[अ॰] इस बात से किसी भी दूसरे फ़र्द से ज़्यादा आगाह हैं कि मक़ामे इमाम क्या है? जनाब अब्बास[अ॰] जानते हैं कि जनाब हसनैन[अ॰] और जनाब ज़ैनाबे कुबरा[स॰] और जनाब उम्मे कुल्सूम[स॰] औलादे फ़ातिमा[स॰] हैं जिनका एहतेराम ख़ुद मौलाए काएनात[अ॰] करते हैं जबकि ख़ुद जनाब अब्बास[अ॰] उस माँ के बेटे हैं जो अपने आप को कनीज़े ज़हरा[स॰] कहलाना पसन्द करती है। अब भला हम ये बात कैसे मान लें कि कर्बला में जब लश्करे उमरे साद के सिपाही ख़्यामे हुसैनी को फ़ुरात के साहिल से हटाने के लिए आगे बढ़े और जनाब अब्बास[अ॰] ने अपनी शमशीर से एक ख़त खींच दिया था और किसी को उस ख़त से आगे नहीं बढ़ने देते थे। इसके बाद कुछ नादान दोस्त जोशे ख़िताबत में एक नाजायज़ इज़ाफ़ा कर देते हैं कि जब जनाब सैय्यदुश्शोहदा[अ॰] ने जनाब अब्बास[अ॰] को ख़ेमे हटाने का हुक्म दिया तो आपने ये हुक्म मानने से इन्कार कर दिया और इमाम हुसैन[अ॰] को ख़ेमें में ये पैग़ाम भिजवाना पड़ा कि ज़ैनब ''शेर को जलाल आ गया है उसे जंग करने से रोको'' उस पर जनाब ज़ैनब[स॰] ने जनाबे फ़िज़्ज़ा[अ॰] के ज़रिए पैग़ाम भिजवाया कि ''अब्बास[अ॰] तलवार न्याम में रख लो वरना ज़ैनब[स॰] ख़ेमे से बाहर आ जाएगी''।

जैसा कि मैंने अर्ज़ किया कि ऊपर लिखे इज़ाफ़ी जुमले सिर्फ़ चन्द लोग ही अदा करते हैं बाक़ी ज़िम्मेदार ज़ाकिरीन और ख़तीब हर क़दम पर एहतियात से काम लेते हैं। अब आप ख़ुद ही ग़ौर कीजिये एक तरफ़ हम जनाब अब्बास[अ॰] को अमली ज़िन्दगी में हुसैन[अ॰] का ग़ुलाम पाते हैं, आपकी ज़ियारत में आपको अब्दे सालेह, मौला का इताअत गुज़ार और जाँनिसार जानते हैं दूसरी तरफ़ आपकी शख़्सियत को एक ऐसे ग़ुस्सावर शख़्स की तरह पेश करते हैं कि नऊज़बिल्लाह जब उसे

गुस्सा आ जाए तो वह अपने इमाम का हुक्म भी नज़र अन्दाज़ कर देता है। मआज़ल्लाह

बस इसी को हमने नादान दोस्ती का नाम दिया है। हमें समझ लेना चाहिए कि अगर कर्बला में जनाब अब्बास[अ०] का किरदार न होता तो क़यामत तक न तो वफ़ा का मफ़हूम समझ में आता न ही इताअते इमाम की हक़ीक़त मालूम होती और न ही अलमदारी की अहमियत उजागर होती। कर्बला में ख़वातीन में जनाब ज़ैनब[स०] और मर्दों में जनाब अब्बास[अ०] का किरदार सबसे जुदा है। आपने अलमदारी के लक़ब को मेराज अता कर दी आपने कर्बला में ये भी सिखाया कि अलम उठाना कमाल नहीं है बल्कि उसे बचाने की ख़ातिर बाज़ू कटवा देना कमाल है। वाक़िअ-ए-कर्बला से मन्सूब जितनी भी निशानियाँ हैं मसलन गहवारा, ताबूत, ज़ुलजनाह और ख़ास तौर पर ये सब निशानियाँ अपने अन्दर शुजाअत की दास्तानें लिए हुए हैं। हज़रत अब्बास[अ०] के अलम की शबीह उठाने वाला बहुत सोच समझ कर ये अलम उठाए ये कोई रसमी कारवाई नहीं है बल्कि ये अलम उठाना इस बात का एलान है कि दीन के परचम की सरबलन्दी के लिए जब तक बाज़ू सलामत हैं और जिस्म में ताक़त है यज़ीदियत के मुक़ाबले में डटे रहना है।

ख़ुदा नख़्वास्ता, ख़ुदा नख़्वास्ता ऐसा न हो कि जब आज़माईश का मैदान आए तो..... □□□

बक़िया... जेहादे मुख़्तार

एक महफ़ूज़ जाय पनाह तक पहुँचा कर चले गए।

अन्त में मुसअब पुत्र ज़ुबैर ने सम्भवतः अपने बड़े भाई अब्दुल्लाह पुत्र ज़ुबैर के कहने पर ही एक बहुत बड़ा लशकर लेकर कूफ़े पर आक्रमण कर दिया मुख़तार ने मुक़ाबले की तैयारी की मगर मशीयते इलाही का फैसला कुछ और था मुख़्तार अपने मक़सदे हयात को पूरा कर चुके थे इनकी ताक़त भी इस समय एकत्र न थीं क्योंकि इब्राहीम पुत्र मालिके अशतर नसीबैन में थे और इस सूरत में इन्हें कोई ख़बर न थी मुसअब के पास फ़ौज बहुत ज़्यादा थी और मुहम्मद पुत्र अशीश रुअसाए कूफ़ा साथ थे इसलिए ख़ुद कूफ़े के बहुत से लोग जो दबे थे वह भी उसका साथ देने खड़े हो गए नीज़ मुख़्तार के ख़िलाफ़ एक गिरोही सवाल अरब और ग़ैर अरब का उठा दिया गया था और यह कहकर कि मुख़्तार ने अजमियों को अरबियों पर मुसल्लत कर दिया।

तमाम अरबों को मुख़तार के ख़िलाफ़ भड़काया गया ताहम मुख़्तार ने अपने पास के लशकर के साथ कई दिन बड़ी बहादुरी के साथ मुसअब से जंग की जिसके दौरान इनके साथ के कई प्रसिद्ध सरदार जैसे हमर पुत्र शमीत और अब्दुल्लाह पुत्र कामिल आदि शहीद हुए इस जंग में विरोधी फ़ौज में से एक आदमी जो दुश्मनाने अहलेबैत में प्रसिद्ध था यानी मुहम्मद पुत्र अशीश मारा गया।

अन्ततः मुख़्तार के तमाम बावफ़ा साथी शहीद जंग मुन्तसिर और वह ख़ुद क़िले के भीतर घिर गए फिर कुछ बहादुरों के साथ निकल कर उन्होंने आख़िरी बार बढ़ी जवाँमर्दी के साथ जंग की और मारक-ए-जंग में 14 रमज़ान 67 हिजरी को 67 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

अदावत और क़सावत की हद यह थी कि उसके बाद उनकी बीवी अमरह पुत्री बिन्ते नोमान पुत्र बशीर अन्सारी को भी जिन्होंने मुख़्तार को बुरा कहने से इनकार कर दिया था मजम-ए-आम में क़त्ल कर दिया गया यक़ीनन ख़ुशक़िस्मत है वह इन्सान जो मशीयत के किसी मक़सद की पूर्ति का साधन बने मुख़्तार[र०अ०] उन ही ख़ुश क़िस्मत लोगों में से थे इनकी ज़ात के साथ क़ुदरत ने अपना एक अमली निज़ाम वाबस्ता किया था और इस निज़ाम को पूरा होने के साथ इनकी ज़िन्दगी भी ख़त्म हो गई अब वह ख़त्म नहीं हो गई बल्कि जावेदानी तौर पर बाक़ी है।

हरगिज़ नमीरद आँ कि दिलश ज़िन्दा शुद बइश्क़
सब्त अस्त बर जरीद-ए-आलम दवामे मा

मुख्य समाचार

क़ुरआन सोज़ी की मुख़ालिफ़त और अहमदी नेजाद की हिमायत में तजावीज़ मंज़ूर: मौलाना सै० कल्बे जवाद

मजमए अहलेबैत हिन्दुस्तान का देहली में तीसरा एकरोज़ा जल्सा मुनअक़िद हुआ जिसमें मुल्क के मुमताज़ व मारूफ़ आलिमों और ख़तीबों ने शिरकत करते हुए शिया क़ौम की मौजूदा इल्मी, इक़्तेसादी, दीनी, फ़िक्री, सक़ाफ़ती और समाजी मौजूदा सूरते हाल पर रौशनी डाली। इजलास में मशहूर शिया आलिमे दीन और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य मौलाना सै० कल्बे जवाद, नाज़िमिया कालेज लखनऊ के प्रिंस्पल मौलाना हमीदुल हसन, मदरस-ए-अहलेबैत के उस्ताद मौलाना अस्करी, बनारस के मौलाना ज़फ़र हुसैनी के अलावा दूसरे उलमा-ए-केराम ने भी शिरकत की। हालांकि मजमए अहलेबैत हिन्दुस्तान के सेक्रेट्री सै० मुहम्मद असकरी का दावा है कि इस इजलास में कोई भी सियासी गुफ्तगू नहीं की गई और न ही बेरूनी मुमालिक से मुताल्लिक़ कोई तजवीज़ पेश की गई लेकिन इत्तेला के मुताबिक़ अमरीका में क़ुरआन सोज़ी की मज़म्मत और जनरल काउंसिल में ईरानी सदर अहमदी नेजाद के ज़रिए 9/11 पर दिये गए बयान की तजवीज़ पेश की गई जिसकी सब ने ताईद की है। इस सिलसिले में सहाफ़त से बात करते हुए मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि ये बात दुरुस्त है कि इजलास में एलान कराया गया था कि इसमें सिर्फ़ हिन्दुस्तान से मुताल्लिक़ ही चीजें पेश की जाएंगी लेकिन मैंने मौजूदा सूरते हाल के पेश नज़र अमरीका में क़ुरआन सोज़ी के ख़िलाफ़ तजवीज़ पेश की और कहा कि दुनिया में कहीं भी इस क़िस्म की इस्लाम मुख़ालिफ़ हरकत की जाएगी तो हम उसकी मज़म्मत ज़रूर करेंगे और आज भी करते हैं। इस पर सब ने ताईद की। उन्होंने कहा कि दूसरी तजवीज़ मेरी सदरे ईरान अहमदी नेजाद से थी। मैंने अपनी तजवीज़ में कहा कि दुश्मनों के मुल्क में जाकर जिस तरह से हक़गोई का सुबूत अहमदी नेजाद ने पेश किया है उस पर हम सबको फ़ख़्र है और 9/11 के वाक़िए की उन्होंने जिस तरह से नक़ाब कुशाई की है उसकी हम ताईद करते हैं। मैंने ये भी कहा कि आज जब सारी दुनिया ने ईरान का साथ छोड़ दिया है तो क्या हम भी छोड़ देंगे? कम से कम हम लोग तो ऐसा नहीं कर सकते। हमारी इस बात की भी सबने ताईद की। इसके अलावा इस सिलसिले की दिलचस्प बात ये है कि मजमए अहलेबैत हिन्दुस्तान ने अपने को सियासी सरगर्मियों से अलग क़रार दिया अगरचे सियासत के सिलसिले में आयतुल्लाह इमाम ख़ुमैनी ने कहा था कि "सियासत दीन से अलग नहीं है"।

(रोज़नामा 'सहाफ़त' देहली, 29 सितम्बर 2010 पेज-3)

मजमए अहलेबैत[अ०] हिन्दुस्तान का देहली में तीसरा एक रोज़ा इजलास

इजलास के मुताल्लिक़ मौलाना मुहम्मद असकरी की वज़ाहत

मजमए अहलेबैत हिन्दुस्तान का क़याम गुज़श्ता साल अक्टूबर 2009[ई०] में मुल्क के नुमाइन्दा उलमा व ज़ाकेरीन और बरआवुरदा शख़सियात की मौजूदगी में इत्तेफ़ाक़े आरा से अहलेबैत अतहार अलैहिमुस्सलाम की वसी पैमाने पर अपनी इल्मी, फ़िक्री, सक़ाफ़ती और समाजी ख़िदमात की ग़रज़ से अमल में आया था और ये इदारा अपने वजूद में एक मुस्तक़िल इदारा है जिसका मुल्क या बेरूने मुल्क के किसी भी इदारे से न इलहाक है न इसकी कोई शाख़ है और दूसरे ये कि सियासी सरगर्मियाँ इस इदारे के अग़राज़ो मक़ासिद में क़तअन शामिल नहीं है। इस मजमा का तीसरा इजलास देहली में वसी पैमाने पर मुनअक़िद हुआ। जिसमें मुल्क की मुम्ताज़ और मायानाज़ इल्मी शख़सियतों ने शिरकत की। ये इजलास दीनी व क़ौमी ख़िदमात को बेहतर और मुनज़्ज़म तरीक़े पर अन्जाम देने की राहें तलाश करने के सिलसिले में ख़ुद मजमए अहलेबैत हिन्दुस्तान के ज़ेरे एहतेमाम मुनअक़िद हुआ था और मजमए जहानी अहलेबैत का इस इनएक़ाद में कोई दख़ल नहीं था, दुनिया में इस वक़्त मौजूद सियासी मसाएल व हालात पर कोई भी दूसरा सियासी प्रोग्राम उसके इन्एक़ाद के मक़ासिद में शामिल नहीं था.........

ग़ज़्ज़ा के लोगों को भूक और ग़ुरबत में नहीं छोड़ सकते: तुर्क वज़ीरे आज़म

तुर्क वज़ीरे आज़म रजब तैयब एरदवान ने एक बार फिर फिलिस्तीनी शहरियों ख़ासकर ग़ज़्ज़ा के शहरी क़ैदियों की हर मुमकिन मदद जारी रखने के अज़्म को दोहराया है। उनका कहना है कि वह ग़ज़्ज़ा के बच्चों को भूक, ग़ुरबत और अफ़लास में नहीं देख सकते, जहाँ तक हो सका उनके हुक़ूक़ की जंग लड़ते रहेंगे। ज़राए के मुताबिक़ तुर्क वज़ीरे आज़म ने इन ख़यालात का इज़्हार बुध के रोज़ इस्तम्बोल में ताजिरों और सनअतकरों की आज़ाद तनज़ीम "अल-मूसाद" की तरफ़ से तिजारती नुमाइश के इफ़्तेताह पर ख़िताब के दौरान किया। उन्होंने कहा कि हम फिलिस्तीनी बच्चों के साथ होने वाली ज़्यादतियों पर ख़ामोश तमाशाई बनकर और हाथ बाँध कर नहीं बैठ सकते। उन्हें इन्साफ़ फ़राहम करने के लिए तुर्की हर सतह पर कोशिश जारी रखेगा। तैयब एरदवान ने कहा कि ग़ज़्ज़ा में नाकाबन्दी का शिकार बच्चों और पाकिस्तान में सैलाब से मुतास्सिर बच्चों की मुश्किलात एक जैसी हैं। तुर्की उनकी हर मुमकिन मदद जारी रखेगा। तुर्क वज़ीरे आज़म ने कहा कि उन्होंने माज़ी में भी फिलिस्तीनी अवाम की बहबूद के लिए काम किया है और आइन्दा भी उनकी मदद से पुश्त नहीं फेरेंगे। उन्होंने आलमी बिरादरी ख़ासकर आलमे इस्लाम से मुतालबा किया कि वह भी महसूरीने ग़ज़्ज़ा और पाकिस्तान में हालिया सैलाब से होने वाली तबाही में उनकी मदद के लिए मज़ीद इमदाद फ़राहम करें।

दुनिया जान ले कि इस्राई अपने इख़्तेताम की तरफ़ बढ़ रहा है: ईरानी राष्ट्रपति

ईरान के सदर डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने इस्राईल को उसकी सरहद पर ललकारते हुए कहा कि यहूदियों का फ़ना होना उनका मुक़द्दर है। डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने लेबनान में इस्राईल की सरहद से मुत्तसिल बिन्ते जुबैल में लेबनानी तनज़ीम हिज़्बुल्लाह के हामियों की एक अज़ीमुश्शान रैली से ख़िताब करते हुए इस्राईल के ख़िलाफ़ चार बरस से जारी हिज़्बुल्लाह की मुज़ाहमत की भरपूर तारीफ़ की। ईरानी सदर ने कहा 'दुनिया को ये समझ लेना चाहिए कि यहूदियों को भी फ़ना होना है' उन्होंने कहा 'लेबनान ज़िन्दा क़ौमों का मुल्क है और इलाक़ाई मुल्कों के लिए एक मिसाल है'।

इस्राईल की वज़ारते ख़ारजा ने अहमदी नेजाद के बयान पर रद्दे अमल ज़ाहिर करते हुए कहा कि ईरानी सदर तशद्दुद का पैग़ाम फैला रहे हैं और इस्राईल के ख़िलाफ़ अपने जारेहाना मन्सूबे पर अमल करने के लिए लेबनान को अपना प्लेटफ़ार्म बना रहे हैं। बिन्ते जुबैल इस्राईल की सरहद से सिर्फ़ चार किलोमीटर दूर है। इस्राईल के चैनल-2 टेलीवीज़न ने का कि डाक्टर अहमदी नेजाद की इस्तेक़बालिया तक़रीब में उनके हज़ारों हामियों की नारेबाज़ी की आवाज़ें सरहद के इस पर भी सुनी जा रही थी। चार बरस क़ब्ल लेबनान और इस्राईल के दरमियान 34 दिनों जारी रहने वाली लड़ाई में ये क़सबा बमबारी से बुरी तरह तहस-नहस हो गया था, जिसके बाद बेशतर इमारतों की तामीरे नौ की गई है। अहमदी नेजाद ने कहा मैं ये एलान करता हूँ कि बिन्ते जुबैल ज़िन्दा है और मज़बूत खड़ा है। दुनिया को ये जान लेना चाहिए कि बिन्ते जुबैल को अपने अज़्म और बहादरी पर नाज़ है और वह दुश्मनों के ख़िलाफ़ आख़िरी दम तक खड़ा रहेगा।

ईरान के सदर ने कहा 'आप लोग (लेबनानी) सलामत रहेंगे और आपके 'दुश्मन' जो इन्सानियत के भी दुश्मन हैं, मौत और तबाही का शिकार होंगे। आपकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई हुई है जबकि आपके दुश्मन यहूदी ज़लीलो ख़्वार हुए हैं' उन्होंने कहा कि दुश्मनों के सामने ख़ुद सुपुर्दगी करने और ज़ुल्म से तौबा करने के अलावा कोई चारा नहीं है। फिलिस्तीन आज़ाद होगा।

दुनिया को इस्राईल के बारे में अहमदी नेजाद की हक़गोई गवारा नहीं: सै० हसन नस्रुल्लाह

लेबनान में इस्राईली मुख़ालिफ़ शिया तन्ज़ीम हिज़्बुल्लाह के जनरल सेक्रेट्री सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा है कि तेहरान का मशिरक़े वुस्ता में प्रोग्राम फिलिस्तीनी क़ौम और अरब मुमालिक की सोच के मुताबिक़ है। दुनिया अरब मुमालिक को ईरान से बिला जवाज़ ख़ौफ़ज़दा कर रही है। मरकज़े इत्तेलाआत फिलिस्तीन के मुताबिक़ ग़ैर मुल्की ख़बररसाँ एजेंसियों के मुताबिक़ हिज़्बुल्लाह के सरबराह ने इन ख़यालात का इज़्हार ईरानी सदर महमूद अहमदी नेजाद की बैरूत आमद पर उनके इस्तेक़बाल के लिए मुनअक़िदा एक जलसे से अपने एक रिकार्ड पैग़ाम में किया। सै० हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि ईरान का मशिरक़े वुस्ता मन्सूबा ख़ित्ते में अवाम के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि उनके हक़ में है। उनके बक़ौल "ख़ित्ते में फ़साद और बदअमनी के ख़ातमे की ज़मानत सिर्फ़ ईरान ही फ़राहम कर सकता है, क्योंकि उसका मशिरक़े वुस्ता में वही प्रोग्राम है जो ख़ित्ते की दूसरी अक़वाम ख़ास कर अरबों और फिलिस्तीनियों का है।" सै० हसन नस्रुल्लाह ने ईरान की इस्लामी हुकूमत को आलमे इस्लाम के लिए एक नेमत क़रार दिया। मुसलमानों को मुख़ातब करते हुए सै० हसन नस्रुल्लाह का कहना था कि "इस्लामी जमहूरिया ईरान ख़ुदा की बहुत बड़ी नेमत और मौजूदा दौर में ग़नीमत है, इसे ज़ाया होने से बचाएं और इस इस्लामी रियासत से इस्तेफ़ादा करें।" सै० हसन नस्रुल्लाह का कहना था कि दुनिया और मशिरक़े वुस्ता के बाज़ मुमालिक अरबों को ईरान से ख़ौफ़ज़दा करने की कोशिश कर रहे हैं, हालांकि ईरान अरबों के लिए ख़ौफ़ नहीं बल्कि इत्मिनान का बाइस है। ईरान अरबों और फिलिस्तीनियों के वही कुछ चाहता है जो वह ख़ुद अपने लिए पसन्द करते हैं। हिज़्बुल्लाह के लीडर का कहना था कि दुनिया के जानिब से ईरानी सदर महमूद अहमदी नेजाद के ख़िलाफ़ जारी मुहिम उनकी हक़गोई का रद्दे अमल है। अहमदी नेजाद जब इस्राईल के ज़वाल की बात करते हैं तो सच कहते हैं लेकिन दुनिया को सच बर्दाश्त नहीं। दूसरी जानिब बैरूत में ईरानी सदर ने अपने लेबनानी हम मन्सब हैकल सुलेमान से मुलाक़ात के बाद एक मुश्तरका न्यूज़ कान्फ्रेंस से ख़िताब में कहा कि वह फिलिस्तीनी और लेबनानी अवाम के हुक़ूक़ की जंग लड़ते रहेंगे। ईरानी सदर ने इस्राईल की तरफ़ से लेबनानी हुदूद की ख़िलाफ़वर्ज़ियों की शदीद मज़म्मत करते हुए कहा कि इस्राईल को फिलिस्तीनी और लेबनानी इलाक़ों पर तसल्लुत ख़त्म कर देना चाहिए।